श्रीमान 1008 श्री स्वामी,

जगत स्वामी परम पूज्य सन्त

बापू श्रद्धाराम जी महाराज

दा जीवन चरित्र इतिहास

ॐ

ॐ मन्दिर श्रीॐ बापू नारायण

हरनाम जी महाराज ॐ

ॐ

श्रीमान 1008 श्री स्वामी, जगत स्वामी परम पूज्य सन्त बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी दा जीवन चरित्र इतिहास

श्री मान 108 बाबा ठाकुर जी महाराज

आप की सदा ही जय हो।

श्री मान 108 बापू ज्वाला सिंह जी महाराज आप की सदा ही जय हो।

श्री मान 108 बापू ओम नारायण दत जी महाराज आपकी सदा ही जय हो।

श्री मान 108 बापू हरनाम जी महाराज आप की सदा ही जय हो।

श्री मान 108 बापू श्रद्धाराम जी महाराज आप की सदा ही जय हो।

श्री मान 108 बापू गुरदास राम जी महाराज आपकी सदा ही जय हो।

श्री मान 108 बापू भानूदत्त जी महाराज आप की सदा ही जय हो।

ओम शहनशाह झण्डे की सदा ही जय हो।

ॐ

पहला भाग

कृत कवि लालचन्द 'हमदर्द' दास ने दो कवितावां सतगुरु श्रद्धाराम जी दे जीवन चरित्र ते लिखियां ने। ते ऐह जीवन चरित्र इतिहास ओन्हा दो कवितावां दे आधार ते लिखया गया है। ओ दोनों कवितावां इतिहास विच दर्ज हन। ऐस इतिहास विच जो वी कथांवा हन, सौ फीसदी सच्चीयां घटनांवा हन।

ऐह इतिहास श्रीमान 108 बापू भानूदत्त जी महाराज जी दी आज्ञा लेके छपवाया गया है।

अनुवादक :

गुरबक्श लाल

हरीश कुमार खुराना

ॐ बापू नन्दाचौर वालेया तेरी सदा ही जय

भूमिका

मन्दर श्री ओम नारायण जी हरनाम जी महाराज सत्संग सभा ढक्का दिल्ली-9

एस मन्दर विच रोज सवेरे हवन यज्ञ होंदा ए अतः सवेरे-शाम दो समय आरती पूजा और कथा-कीर्तन होंदा ए और खासकर एतवार दे दिन विशेष कार्यक्रम सत्संग भजन-कीर्तन होंदा ए। अतः हर एतवार नूं सत्संग दे बाद भण्डारा होंदा ए। एस मन्दर विच श्री गुरू ग्रंथ साहब जी दा प्रकाश कीता जांदा ए। रोज सवेरे सुखमनी साहब जी दा पाठ, गीता जी दा अध्याय, आसा जी दी वार दा कीर्तन, श्री रामायण जी दा पाठ होंदा ए। शाम वेले श्री रहरास साहव जी दा पाठ होंदा ए; क्योंकि ए सांझा दरवार ए। फिर आरती पूजा पीछों बीबी रामप्यारी चावला कथा कर दी ए। इक दिन शाम वेले कथा दी समाप्ति पीछों संगत विच महापुरुषां दे जीवन चरित्र बारे चर्चा होई तां दास 'हमदर्द' ने कहया ए कवि आत्मा सिंह रेन ने साडी गुरू गद्दी दे सारे महापुरूषां दे जीवन-चरित्र लिखे हन ते उस पुस्तक दा नाम 'हंस चमत्कार' रखया। ते छपवाई गई। तां दास ने कहया के ऐसे तरहां ही महाराज श्रद्धाराम जी दे वी जीवन चरित्र ते कोई इतिहास लिखया जाणां चाहीदा ए, तां सारी संगत ने हां नाल हां मिला दिती। तां फिर बीबी राम प्यारी ने दास वल इशारा कर दिता। तां ओसे दिन तों एन्हा दी प्रेरणा अनुसार दास ने एस बारे सोचना शुरू कर दिता। के मेरे श्री गुरुदेव भगवान बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी दी कृपा अते आशीर्वाद नाल ही ए कारज सम्पूर्ण हो सकदा है।

ॐ

दास दी बेनती अपने सतगुरू देव जी दे चरणा विच

मेरे परम पूज्य कर्मयोगी सर्वशक्तिमान शिरोमणि संत चमत्कारी संत ब्रह्मनिष्ठ, ब्रह्मलीन जगतपिता मेरे परमपिता मेरे श्री गुरुदेव भगवान श्री स्वामी जगत स्वामी संत श्रद्धाराम जी महाराज आप जी दा जीवन-चरित्र इतिहास दास लिखन दा साहस कर रहेया ए। ए मेरे सच्चे पातशाह अपने एस दर दे कुकर नूं ऐसी उत्तम और उज्जवल बुद्धि बख्शों के आप जी दा इतिहास शीघ्र और अतिसुन्दर जग विख्यात लिख्या जा सके। ऐ कार्य आप जी दी कृपा अते आशीर्वाद नाल ही सम्पन्न और सम्पूर्ण हो सकदा है।

श्री स्वामी जगत स्वामी बापू श्रद्धाराम जी महाराज आपकी सदा ही जय है। सदा ही जय हो।

बेंत

पहले वन्दना करां मैं सतगुरां नूं,
सच्चा सतगुरू जे मेहरबान होवे।
कारज रास होवन अपने आप सारे,
पापी जीव दा नाले कल्याण होवे।
मैं नहीं कवि ना कविता लिख जाणा,
मैनूं एतना कदो ज्ञान होवे।
कृपा गुरां दी होवे तां चार अखर,
बोलन जोगी ऐ मेरी जबान होवे।
कम्म ओखे तो ओखे सब ठीक होवन,
पूरा सतगुरू जे निगहबान होवे।
'हमदर्द' गुरु चरणा नाल प्रीत जिसदी,
उसदा विच संसार दे मान होवे।

बेंत

फिर करां प्रणाम हरनाम जी नूं,
चढ्या उन्हा दे नाम दा रंग होवे।
नमस्कार मेरी हंस वाहिणी नूं,
माँ सरस्वती अंग-संग होवे।
मेरी रसना ते होवे निवास माँ दा,
रचना लिखन दा तां सुन्दर ढंग होवे।
ऐसी करो कृपा माँ आदशक्ति,
मेरी रचना दा रंग न भंग होवे।

सब तों पहला भजन जो दास ने बापू श्रद्धाराम जी दे हजूर विच भेंट कीता।

भजन

हम पापी ओगन हारों को बापू तेरा सहारा है दीनबंधु,

मेरी जीवन नैया डोल रही मिलता ना किनारा है दीनबंधु ।

(1) तेरी शरण जो आता है सब संकट दूर हो जाता है। भटका हुआ ये दास तेरे, चरणों पर सर को झुकाता है। मुझे तारो तारन हार हो तुम, ये दास तुम्हारा है, दीनबन्धु। हम...

(2) मुझ पापी पर दया करो, अपराध मेरे सब क्षमा करो। ऐसे हिसाब ना होगा पूरा, पाप ना मेरे गिना करो। भव सिंधु से पार उतारन को, तेरा काफी इशारा है, दीनबन्धु। हम...

(3) कृष्ण भी तुम और राम भी तुम, और मेरे भगवान भी तुम। ओम जी भी तुम हरनाम जी भी तुम, और बापू कल्याण जी भी तुम।

सब जोंतो की एक जोत मेरे सतगुर श्रद्धाराम जी तुम तेरी लीला अपरम्पार लिखे क्या दास विचारा है दीनबन्धु । हम...

(4) और कहो कहाँ जाऊँ मैं, व्यथा किसे सुनाऊँ मैं। तेरे सिवा हमदर्द ना कोई, भटक भटक मर जाऊँ मैं। ठुकराना ना दर आए को, मैंने तुझको पुकारा है। दीनबन्धु। मेरी जीवन नैया डोल रही, मिलता ना किनारा है। दीनबन्धु। हम पापी औगन हारों को, बापू तेरा सहारा है। दीनबंधु...

बापू जी दी आज्ञा

ऐ भजन दरबार ढक्का साहब दिल्ली विच कीर्तन शुरू करन तों पहलां रोज पढ़या करो।

दास नूं

ऐ भजन सुनकर नाम दा दान सतगुरू, श्रद्धाराम जी ने दास हमदर्द नूं दिता।

<u>बेंत</u>

पिंड अट्टी है एक पंजाब अन्दर,

उपमा जिसदी ना मैथों बखान होवे।

जिथे लया अवतार भगवान मेरे,

उस धरती नूं लख-लख प्रणाम होवे।

ईश्वर देवी माता जी ने तप करके,

मंगया ईश्वर तो ऐ वरदान होवे,

गोबिन्द दास जी पिता ने कर भक्ति,

कहया साडे घर प्रगट भगवान होवे।

बेंत

किती मेहर दाते होई आस पूरी,

सारे जग दा करन कल्याण आए।

श्रद्धाराम जी दा रूप धार के ते,

करन कारन ओ आप भगवान आए।

दिन उन्नी वैसाख दा बीतया जद,

आई रात तां दर्शन दिखान आए।

उन्नी सौ पैंताली सम्वत् विक्रमी सी,

लीला धारी जी लीला रचान आए। जद अवतार होया श्रद्धाराम जी दा,

अरशो देवते फूल बरसान आए।

अपने कर्मा दे मारे संसारिया दे,

लखां जीवां दे भाग जगान आए।

बेंत

साढ़े ग्यारह वजे समा रात दा सी,

जदों सतगुरू ने लया अवतार आके।

उस समय सी इतना प्रकाश होया,

निकल आए जयो सूरज हजार आके।

पिंड वाले वी लोग सब जाग उठे,

एक दूजे नूं पूछदे बाहर आके ।

ऐडी रोशनी तेज किथों आ रही ऐ,

इकट्ठे बैठ के करन विचार आके।

एक आदमी दौड़ के आ दसया,
ऊँची आवाज नाल सबदे विचकार आके।
गोविन्द दास जी दे घर पुत होया,
चमके हीरा ज्यों लाल जवाहर आके।
लोग लग पए देन वधाई आके,
बच्चा बूढ़ा जवान नर नार आके।
सारे आखदे ऐ कोई विचित्र बालक,
जापे ईश्वर ने लया अवतार आके।

बेंत

पंज साल दे जदों तुसी आप होए,
घरों निकल के बाहर तुर जांवदे सी,
जाके महड़ी मसाना विच ला आसन,
हरी नाम विच लीन हो जांवदे सी।
खान पीन दा नहीं सी ध्यान रहंदा,
भोजन हरी दे नाम दा पांवदे सी।
मस्ती नाम दी विच सदां मस्त रहंदे,
हरदम गीत गोबिन्द दे गांवदे सी।
वडी बहन महाराज दी जावे पीछे,
ढूँढ़ भाल के घर ले आंवदे सी।
शीश चुमके माँ कराए भोजन,
परिवार सारा वारे जांवदे सी।

दोहरा

सतगुर सच्चे पातशाह हो सर्व सुखां दी खान। कलम ना रुके हमदर्द दी दीजो एह वरदान।।

बेंत

दस साल दी उम्र होई आप जी दी,

माता-पिता ऐ मन विच विचार कीता।

अपनी कुल दी रस्म हो जाए पूरी,

भीक्षा मंगन लई ओन्हा तैयार कीता।

अल्फी पाके भीक्षा लई तोर दिता,

मथा चुमके माता प्यार किता।

भीक्षा मंगन नूं चले दातार मेरे,

एक वारी वी नहीं इन्कार कीता।

दो चार घरों भीक्षा लै के ते,

अगे चले कि खेल करतार कीता।

अगले घर वालेंया कुत्ता पालेया सी,

उस कुत्ते ने ऐन्हा ते वार कीता।

टँग काट खादी जाल्म उस कुत्ते,

खूनो खून सी मेरा दातार कीता।

ओथों दौड़ के अपने घर आए,

डाढ़ा गुस्से दा आके इजहार कीता।

अल्फी लाह भुका के दूर सुटी,

मेरे वस दी नही ए कार माता।

ऐसे साध नालो असी चोर चंगे,

नहीं होवना असां खवार माता।

जरा देख तां सही मेरा हाल की ए, डा

हढा कुत्ता सी ओ खूंखार माता।

हाल वेख के माँ हैरान हो गई,

बड़ी होई बेचैन बेकरार माता,

मरचां रख के जख्म ते बन पट्टी,

करे बेनती अगे करतार माता।
होन भेजांगे नहीं भीक्षा मंगने नूं,
देवे हौंसला पई वारो वार माता।
एक वारी सी भेजना रस्म खातर,
पूरी हो गई कहे पुकार माता।
तुसी रस्म अपनी करदे रहो पूरी,
साडा हो जाए भाँवे बेड़ा पार माता।
भीक्षा मंग नहीं जोड़ना धन कोई,
असां जोड़नी रब्ब नाल तार माता।
जुड़ जाए जे रब्ब नाल तार साडी,
तार तार चों दिसे करतार माता।

<u>बेंत</u>

बाई साल एस तरह व्यतीत हो गए,
सतगुरु हरि दा नाम ध्यांवदे ने।
कारोबार दा जरा ना फिक्र कोई,
जंगल जा समाधियां लावंदे ने।
ऐसे तरह गुजारदे वक्त सारा,
कम्म कार नूं हाथ न लांवदे ने।
माता पिता डाहढे चिंतावान होए,
फिर एस तरह बनत बनावंदे ने।
कर देईये एन्हा दा व्याह छेती,
ऐसे सोच दे घोड़े दोड़ावंदे ने।
देख घर अच्छा अच्छी देख लड़की,
मा पे मंगनी करके आवन्दे ने।
बंधन विच ना पाइए जवान पुत्र,

ऐसे पुत हथों निकल जावंदे ने।

हमदर्द ओहो कम्म होवन्दे ने,

जेड़े कम्म करतार नूं भावन्दे ने।

श्रद्धाराम जी सुनके हैरान हो गए,

फँस गए असी केड़े जाल दे विच।

शादी बारे नहीं असां कदी सोचया सी,

साड़े नही सी खावो ख्याल दे विच।

एथों निकलन दी कोई तदबीर करिये,

दुख डाढे ने गृहस्थ जंजाल दे विच।

घरों नठ के ते नन्दाचौर पहुँचे,

जाके बैठे दरबार दे हाल दे विच।

नन्दाचौर ते गद्दी नशीन सतगुर,

श्री हरनाम जी दी देखभाल दे विच।

ए अरदास किती मेरी मंग मर जाए,

लगे देर ना ऐसे ही साल दे विच।

<u>वाक् कविशर</u> <u>बेंत</u>

दिन ते रात बीते आठ पहर होन्दे,

चौवी घंटे पई घड़ी बतावन्दी ए।

हर रोज एन्हा अठां पहरां अन्दर,

एक घड़ी पलक ऐसी आवन्दी ए।

आँख फरकन दा समां है रोज ओन्दा,

जेड़ी गल मुँह कड्डो हो जावन्दी ए।

ऐ तां कुदरत दा है कानून दासा,

ओथे पेश ना किसे दी जावन्दी ए।

श्रद्धाराम जी ने जो सी बोल आखे,

भावी ओसे तरहा वरत जावन्दी ए।

सज्जनों अगले महीने ही ओ कन्या,

आई मौत दे बिना मर जावन्दी ए।

श्रद्धाराम जी तां आजाद हो गए,

नव धी मोई दी माँ कुरलावन्दी ए।

सज्जनों लिखी तकदीर नूं कौन मोड़े,

प्रारब्ध सबदी आगे आवन्दी ए।

<u>वाक् श्रद्धाराम जी।</u> <u>ख्याल कविशर</u>

<u>बेंत</u>

श्रद्धाराम जी मन विच विचार करदे,

निर्दोष हत्या दा लगेगा पाप मैंनू।

एसदा करिए प्रायश्चित किस तरह जी, बख्शनहार बापू बख्शो आप मैनूं।

पता लगया जे मेरे माँ पेयां नूं,

गुस्से होनगे मेरे माई बाप मैनूं।

जदो तक ना एस दा उपा होवे,

दिल विच रहेगा दुख संताप मैनूं।

हानि लाभ ते यश अपयश जग विच,

जीवन मरण विधाता दे हथ है जी।

होंणी होके रहे हमदर्द कहंदा,

ऐ किसी दे कोझ ना वस है जी।

ॐ

ॐ

बेंत

कीती बेनती फिर हरनाम जी नूं,

तुसी दसो कोई एसदा उपा मामा।

बोझ उतर जाए मेरे दिमाग उतों,

ऐसी युक्ति कोई देओ बता मामा,

मित्र सोई जो विपद विच कम्म आवे।

फर्ज अपना देओ निभा मामा।

बख्शश करो नाले नाम दान देवो,

चेला अपना लवो बना मामा।

वाक् हरनाम जी। ख्याल कविशर

बेंत

करना चाहें प्रायश्चित एस पाप दा तूं,

गल सुनी तूं लाके ध्यान बेटा।

लैके राम दा नाम ते जाओ जल्दी,

गंगा जाइके करो स्नान बेटा।

अड्ढे पहर भगवान दा नाम लैणा,

कुछ हथों करना पुन्न दान बेटा।

पँज डुबकियाँ उस कन्या दे नाम दियां,

लाके ओसदा वी करना कल्याण बेटा।

एह है जगत सराय मुसाफिरां दी,

चार दिन दा बन्दा मेहमान बेटा।

जेहड़ा रब्ब नूं रखदा याद हरदम,

ओहो भला कहलाए इन्सान बेटा।

जेहड़ी गल हूँ कही नाम दान वाली,

ओखा काम है नहीं आसान बेटा।

आड़े आया रिश्ता मामा भानजे दा,

ऐस लई मैं हां परेशान बेटा।

<u>वाक श्रद्धाराम जी।</u> <u>ख्याल कविशर बेंत</u>

<u>बैंत</u>

जेस वासते एड्डा मैं पाप किता,

जे ओ कम्म ना होया आसान मामा।

धृग जीवना मेरा संसार अन्दर,

मेरे वासते नरक जहान मामा।

दे देवो तुसीं नाम दान मैनूं,

ताहीं होवसी मेरा कल्याण मामा।

करो हां छेती मन्नो अर्ज मेरी,

हो जाओ तुसी मेहरबान मामा।

<u>वाक् गुरु हरनाम जी</u>

<u>दोवैया छंद</u>

फिर श्री गुरू हरनाम जी बोले सुन लै श्रद्धारामा, ना तूं मेरा रहयो भानजा ना मैं तेरा मामा। तेरे वास्ते मामा मर गया मेरा मोया भनेवा,एह गल जे मंजूर है तैनूं नाम दान तां देवां। रिश्ता अपना गुरु शिष दा जो शास्त्र मर्यादा, इको गल लख दी आखी होर कहां की ज्यादा। एह गल सुनके श्रद्धाराम ने लख-लख खुशी मनाई, मनोकामना पूर्ण होई दयाल भए रघुराई।नाम दान लैके सतगुर तों पकड़ लया एक गोशा, खान पीन दी सुध न कोई नाम बना लया तोशा। अंतरमुखी हो गए बापू विच गुफा दे बैह के, ऐसी नाम

दी धुणी लगाई रात दिन अकलयां रहके सुन्न समाधि ऐसी लगी आतम दर्सी होए, आत्मा नूं परमात्मा मिलया खुद परमात्मा होए, आत्मा ते परमात्मा विच रहया भेद ना कोई। इक्को जोत नूरानी हो गई ऐस विच शक ना कोई। अठठे पहर समाधि लगी बाहर कदी ना आवन, विच गुफा दे बैह के सतगुरू हरदम नाम ध्यावन।श्री गुरू हरनाम जी दा जद टाईम आखरी आया, शहर ओकाड़े विच बैठ के आसन अपना लाया। आवाज लगाई श्रद्धारामा हुन तां बाहर आओ। दर्शन कर लो संगतां दे संगतां नूं दरस दिखाओ। श्री गुरु हरनाम जी ने दो बांहवां चा पकड़ाइयाँ, संत लाल ते प्यारा लाल दियां दोनों सकेयां भाईयां, सुन लै श्रद्धारामा होण तां जिन्दगी रह गई थोड़ी, सांभ तूं ऐ अमानत साड़ी राम लखन दी जोड़ी। सारी संगत तेरे हवाले तूं संगत दा वाली, बागडोर दिती हथ तेरे तूं ऐस बाग दा माली। सम्वत् वी सौ दो विक्रमी दिन सी अस्सु ग्यारह, आई रात शरीर छोड़या टाईम सी साढे ग्यारह। आया विछोड़ा संगता नूं सब रोंदे ते कुरलांदे, महापुरुषां दियां ओही जाणन भेद समझ ना आंदे। ज्योति जोत समाए सतगुरू श्री हरनाम प्यारे, श्रद्धाराम जी रो रो कहंदे देसी कौन सहारे ।

<u>वाक् कविशर</u>

<u>कबित</u>

आया जो जहान उते जावना जरूर ओस,

राजा होवे रंक भावें होवे कोई अमीर जी,

साधु अते संत बड़े योदे बलवंत,

सती नारी दे वी कंत गए छोड़ के शरीर जी, मानव शरीर विच आए अवतार प्रभु,

देह को त्याग कई गए रणधीर जी,

कहे हमदर्द जाणा असां वी जहान छोड़,

सब चले गए कई वली ते फकीर जी

<u>वाक् श्रद्धाराम जी</u>

<u>कबित</u>

सौंपी मेरे सतगुरां ने एड्डी वड्डी जिम्मेदारी

किस तरहा उठावां ऐह तां बोझ बड़ा भारी है तप ते त्याग ऐंदे लई होवे बोहत सारा,

सोची पै गई जिन्द कोई किती ना तैयारी है सतगुरू दयाल होके करें जो सहाय मेरी,

फिर मिट जावेगी चिन्ता जो सारी है

कहे हमदर्द छुपावंदे ने शक्ति नूँ,

मेरे सच्चे सतगुरू कृष्ण मुरारी है।

कुंडली

सतगुरू दीन दयाल हो अनाथों के हो नाथ विनय सुनो हमदर्द की राखो सिर पर हाथ

राखो सिर पर हाथ होवे इतिहास ए पूरा

दोए कर जोड़ अरदास प्रभु के हाजर हुजूरा

कहे दासन का दास बेनती सुनो स्वामी,

सतगुरू श्रद्धाराम आप हैं अतंर्यामी।

कविता

दास ने अपने सतगुरू देव जी दी कविता दे रूप विच उस्तुति कीती। कविता दे रूप विच अतः ओन्हा दे करिश्मे कारनामे दर्साए हन। सर्वशक्तियाँ अतेः सर्व ताकंता दे मालक बापू श्रद्धाराम जी महाराज आपकी सदा ही जय।

ए कविता बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी दे प्रकाश उत्सव यानि जन्मदिन ते लिखी गई ते दरबार ढक्का साहब दिल्ली विच सम्वत् 2020 (वी सौ वी) बिक्रमी उन्नी विसाख नूँ बोली गई ते एस तो बाद बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी दे हुजूर विच पेश कीती गई।

ओम शहनशाह झण्डे की सदा ही जय

प्रथम शब्द कवि वलों

मन्दर दी सजावट वेख के संगत प्रीति

वधाई वजों

वेंत

दर बापू दे खिड़ी गुलजार होवे

ठाट वाट एस तरह वनाई होवे

जन्मदिन मनाविए सतगुरां दा

सारी संगत नूँ मेरी वधाई होवे ।।

कविता लिखन तों पहलां कवि दी अपने

गुरूदेव जी दे चरणा विच वंदना

बेंत

पहले वंदना करां मैं सतगुरां नूँ
सच्चा सतगुरू जे मेहनवान होवे।
कारज रास होवन अपने आप सारे
पापी जीव दा नाले कल्याण होवे।
मैं नहीं कवि ना कविता लिख जांणा
मैनू एतना कदो ज्ञान होवे।
कृपा गुरां दी होवे तां चार अखर
बोलन जोगी ए मेरी जवान होवे।

कविता शुरू होई

मेरे बंधुओं ध्यान दे करके सुनना
मैं एक कर्मयोगी दी गाथा सुनावां।
तुसी रोज वेंहदे ओ अम्बर दा सूरज
ते धरती दा सूरज मैं तोहानूं दिखावां।
ए श्रद्धालु सारी ही दुनिया एन्हा दी
ते ना एन्हा दा श्रद्धाराम बतावां।
चमत्कार एन्हा दिखाए ने लखां
तां श्रद्धा दे फूल, आके मैं वी चढ़ावां।

जिला एक जलन्धर है पंजाब अन्दर
ते अट्टी है पिंड जिसदे सोहने ने मन्दर।
उस अट्टी दे जागे जदों भाग आ के
लया आ के अवतार है कृष्ण चन्दर।
माता ईश्वर देवी पिता गोबिन्द दास

जो ऐसे लगन विच सी रहंदे उदास।
के ईश्वर लवे जन्म घर आके साड्डे
करी मेहर दाते होई पूरी आस।
सम्वत् उन्नी सौ पैंताली सुहाणी सी रात विक्रमी सी सम्वत् ते उन्नी विसाख।
करो मेहर दाता होवे आस पूरी
के दर्शन दी लगी है मैनूं वी प्यास।
ए वरदान देवो मेरे श्याम सुन्दर
के उस्तुत मैं हरदम तोहाडी ही गावां।
तुसी रोज वेंहदे ओ अम्बर दा सूरज
ते धरती दा सूरज मैं तोहानूं विखांवां।

कृष्ण ने चलाया सुदर्शन सी चक्र
एन्हा ने चलाया है नाम दा चक्र ।
एस चक्र ने दे दे के चक्कर ते चक्कर
चां लखां दे कटे चौरासी दे चक्कर।
तेजस्वी तपस्वी त्यागी बैरागी
ते बालक पने तों जो हैंन ब्रह्मचारी।
है जलवा नूरानी जो रहबी निशानी
तड़क तेज किरना दा चक्कर है भारी।
है प्रकाश इतना के जाए ना झलया
जिवें निकल आए ने सूरज हजारी।
के है विराट रूप कृष्ण फिर दिखाया
दोबारा है आया ए बाँका बिहारी।
नही झूठ रती है जुर्रत ना पैंदी
के एन्हा दी अखां नाल अखां मिलावां।

तुसी रोज वेंहदे ओ अम्बर दा सूरज
ते धरती दा सूरज मैं तोहानूं विखावां।

जे चाहवण तां कर देन उथले पुथले
करन धरती ऊपर ते आकाश थले ।
सणे ब्रह्मा, विष्णु ते शिवजी ते बाकी
ए कुल कायनात एन्हा दी आज्ञा विच चले।
भरे होए ने गम्भीर ते भरपूर भांडे
कदी क्रोध विच आके नहीं शक्ति विखांदे। होवन सुणियां गोदियाँ कुखां हरियाँ
ते थलां दे विच पए ने दरिया वगांदे।
पलट जाए किस्मत करन जे इशारा
ते कुदरत दी लिखी होई नूँ मिटांदे।
बिना पढ़याँ नूँ पास परीक्षा विचों करदे
नवीं तो नवीं रोज लीला विखांदे।
ते गऊआं दे सींग पुट के मझां नूं लावन
ते मझां दे पुट के पए गऊओं नूं लांदे।
किसी नूं ओ काले तों गोरा बनावन
किसी बुद्ध नूं बुद्धिमान बनांदे।
जो निश्चा ते श्रद्धा नूं करके ते पक्का
एंदे द्वार आए नहीं खाली जांदे।
जे दो चार होवन तां गिन के मैं दसां
एह कौतक ने लखां मैं की की सुनावां।
तुसी रोज वेंहदे ओ अम्बर दा सूरज,
ते धरती दा सूरज मैं तोहानूं विखावां।
जेड़ा शरण आवे तिसे कंठ लावे,

होवे किड्डा पापी धिक्कारन कदे ना।
असीं जे एन्हा नूँ चा बेशक भुलाइए,
ए भुलन कदे नां विसारण कदे ना।
पए भीड़ भगतां ते मुश्किल ते भारी,
ए थकन कदे ना ते हारन कदे ना।
ए दासां दे दुखड़े ने सीस अपने लैंदे,
किसी दुःखी दा दुःख सहारन कदे ना।
चा हमदर्द जे लखां पापी ने तारे,
ते डुबदी होई नैय्या लगाई किनारे ।
मिले प्यार ओसनूं जो लगदे ने प्यारे,
मिले प्यार ओस दे जो बन जान प्यारे।
ऐसे सतगुरू तों मैं वारे न्यारे।
मिले चरण धुली तां मस्तक ते लावां
तुसीं रोज वेंहदे ओ अम्बर दा सूरज
ते धरती दा सूरज मैं तोहानूं विखावां।
ए श्रद्धालु सारी ही दुनिया एन्हा दी,
ते नां एन्हा दा श्रद्धाराम बतावां।
चमत्कार एन्हा दिखाए ने लखां,
तदे आके श्रद्धा दे फूल मैं चढ़ावां।

(इति सम्पूर्ण)

<u>एस कविता दी व्याख्या अगे लिखी है।</u>

कर्मयोगी बापू श्रद्धाराम जी

<u>वाक् कविशर</u>

<u>बेंत</u>

दसां नवां दी करदे सी कीरत स्वामी,

सूरमा पीसदे सी हथां नाल सज्जनों।
सूरमा वेच के करदे गुजरान अपनी,
सूरमा ऐसा बनांदे कमाल सज्जनों।
नाम सूरमे दा रखया प्रेम अन्जन,
प्रेम नाल जो करे इस्तेमाल सज्जनों।
ज्योति नैना दी दुन सवाई होवे,
सूरमा ऐसा है लाजवाल सज्जनों।
नन्दाचौर दरबार दे विच रहंदे,
करदे सेवा निष्काम हर हाल सज्जनों।
अन्न जल ना डेरे दा ग्रहण करदे,
ऐसी मिले ना किते मिसाल सज्जनों।

<u>बेंत</u>

हथी कार करनी भजन तप करना
ऐस तरह कर्मयोगी कहलाए सतगुर।
दीन दुखियाँ दे संकट सब दूर करदे
जेहड़ा चलके शरण विच आए सतगुर।
रिद्धि सिद्धि दे मालक भरपूर स्वामी,
बैठे ईश्वर विच ज्योत मिलाए सतगुर।
करिश्मे ऐन्हा दे नहीं ब्यान होंदे,
कारनामे हन जो-जो दिखाए सतगुर।
तप तेज सी ऐड्डा ना सहन होवे,
ताहिंयो धरती दा सूरज कहलाए सतगुर
नजरां नाल ना मिलिया हमदर्द नज़रां,
किड्डा वड्डा वी बनके कोई आए सतगुर।

<u>चक्रधारी मेरे सतगुरू श्रद्धाराम जी</u>

बेंत

चक्र नाम दा ऐन्हा चलाया ऐसा
लखां पापियाँ दे बेड़े तार दिते।
कईयाँ झोपड़ियाँ विच रहन वालेयाँ दे,
सुदामे वांग सी महल उसार दिते।
अट्ठारह साल बापू दर दी कर सेवा,
बीबी रामप्यारी तन मन वार दिते।
कुक्खां कर हरियाँ गोदां कई भरियाँ,
सिकदी इक नूँ सी पुत चार दिते।
बघे ऐन्हा दे रब्ब तो ना छुटे,
बघे रब्ब दे एन्हा छुड़ा दिते।
किस्मत पलट देंदे एक पलक अन्दर,
लिखी कुदरत दी ते काटे मार दिते।
कर दया दृष्टि नाम दान देके,
लखां जीवां दे जन्म संवार दिते।
चक्कर लखां दे कट चौरासियाँ दे,
हमदर्द जेहे पापी तार दिते।

चमत्कारी मेरे बापू श्रद्धाराम जी

बेंत

सुरिन्द्र पाल गुम्बर ने चिट्ठी विच लिखिया, स्कूल मास्टर दा मेरा इम्तिहान आया।
कीती उसदी पढ़ाई मैं जरा वी नहीं,
लैटर आया तां मैनूं ध्यान आया।
मेरी नौकरी दा है सवाल बापू,
आशीर्वाद तोहाड़ा मैं हां पान आया।
ऐस इम्तिहान विचों पास हो जावसां मैं,

जे आशीर्वाद तोहाड़ा दयावान आया।

उत्तर चिट्ठी दा दिता दातार मेरे,

बापू आप है तैनूं पढ़ान आया।

बिना पढ़या ही पास हो जाएंगा तूं,

अंग संग बापू निगाहबान आया।

आशीर्वाद साडा हरदम नाल तेरे,

बेधड़क ओह दे इम्तिहान आया।

होया पास ते खुशियाँ अपार होईयाँ,

लगी नौकरी ड्यूटी बजान आया।

चमत्कार बापू श्रद्धाराम जी दा,

बिना पढ़या ही पास करान आया।

लोक सुखी परलोक सुहेला करना,

हमदर्द वी ऐ वर पान आया।

करामाती मेरे सतगुरू श्रद्धाराम जी

बेंत

दौलत राम वडा संतराम छोटा,

अपनी जात खरबंदा कहलावंदे ने।

दोनों भाई ने दिल्ली दे रहन वाले,

हथीं आपनी साइकिल बनावन्दे ने।

संतराम छोटा है चालाक ज्यादा,

दौलतराम सीधे नजर आवन्दे ने।

हरदम हँसी उड़ाए भीरा दी ओह,

दौलतराम शर्मिन्दा हो जावन्दे ने।

आया जेठ दा यज्ञ तां दोनों भाई,

नन्दाचौर दे विच पहुँच जावन्दे ने।

सच्चे सतगुरू बापू श्रद्धाराम जी दे,
जाके चरणां ते सीस निवावन्दे ने।
दौलतराम कहंदा महाराज जी नूं,
ऐह हरदम मेरा मजाक उड़ावन्दे ने।
ऐह है छोटा पर है चालाक ज्यादा,
मैनूं भोले नूँ बुद्ध बनावन्दे ने।
करामात देखो मेरे सतगुरू दी,
बुद्धिमान नूं बुद्ध बनावन्दे ने।
संतराम दे सिर तों भर चुटकी,
दौलत राम दे सिर ते पावन्दे ने।

<u>बेंत</u>

मुखों आखदे ऐस दी अक्ल कढ के,
असां सिर तेरे विच पा दिती।
तेरी हँसी हुन कदी उड़ावसी ना,
आशीर्वाद तैनूं असां चा दिती।
संतराम ने लापरवाही किती,
ऐह नहीं मनन दी गल भुला दिती।
ऐह कोई खेल मदारी दा है थोड़ा,
एदरों अक्ल कढी ओदर पा दिती।
होया यज्ञ समाप्त तां घर आए,
कैसी बापू ने कला वरता दिती।
अपनी-अपनी दुकानां नूं खोल बैठे,
चाबी सतगुरां ऐसी घुमा दिती।

<u>बेंत</u>

सारा दिन दुकान ते कम कीता,

कीती बंद दुकान घर जान खातर।

टाइम पीस सी रखया बाहर कढ के,

संत राम ने घर ले जान खातर।

घर पहुँच के इकदम ख्याल आया,

घड़ी कड्डी-सी घर लयान खातर।

ओह तां चुकी नहीं रह गई बाहर ओथे,

भेजेया पुत नूं पता करान खातर।

बेंत

आंदे-जांदे ओह किसे ने चुक लिती,

माल मुफ्त दा छडदा कौन भाई।

पुत दसया आके घर अपने,

कोई नहीं घड़ी दा नामोनिशान भाई।

कर अफसोस ते बैठ गए चुप करके,

कला वरती नूं मेटदा कौन भाई।

किती शांति चारा ना होर कोई,

कम्म प्रभु नूं भावन सो होन भाई।

वाक् कविशर। ख्याल कविशर

बेंत

अगले दिन दुकान जा फिर खोली

थोड़ी देर मगरों सेल्समैन आया।

बंडल टायरां दा लाह के ट्रक उत्तों,

कहंदा संतरामा तैनूं देन आया।

पेमेन्ट ऐस दी तुसां नकद करनी,

तंगी माल दी दा वक्त ऐन आया।

तोहाडा मेरा प्यार है मुद्दतां दा,

ऐस वास्ते तोहानूं मैं देन आया।

बेंत

बंडल टायरां दा लै संतराम जी ने,
अपनी दुकान दे बाहर रखवा दिता।
सेल्समैन दा करके भुगतान मगरों,
ध्यान कम्म दे विच लगा दिता।
कम्म करदेयां सारा दिन जान थक्की,
कर दुकान नूं बंद ताला ला दिता।
घर आके ते खाना खा के ते,
सोन वास्ते बिस्तर विछा दिता।
रात सुतयां गुजरी आराम सेती,
प्रातःकाल फिर पत्नी जगा दिता।
करो इस्नान, ध्यान ते खाओ फुलका,
जाओ खोलो दुकान फरमा दिता।

बेंत

संत राम जी गए दुकान खोली,
बंडल टायरां वाला नजर आया ना।
पाया बोझ दिमाग ते याद आया,
बंडल टायरां दा अंदर रखवाया ना।
ओह तां रह गया बाहर दा बाहर राती,
जान लगयां वी नजर आया ना।
मेरी अक्ल दे विच पै गए पत्थर,
ओस वक्त ख्याल ऐह आया ना।
करामात बापू श्रद्धाराम जी दी,
अपने मन नूं एह समझाया ना।

भेद संतां दे संत ही जानदे ने,

दुनियांदारां ने भेद एह पाया ना।

तैनूं कहे हमदर्द, सुन संत रामा,

नन्दाचौर जाके फेरा पा आ तूं।

नन्दाचौर जाके नाक रगड़ के ते,

मंग माफिया भुलां बक्शाह आ तूं।

<u>वाक् कविशर</u>

<u>कबित</u>

दूजे दिन होके तैयार ते सवार होके,

रेल ते ओह झट नन्दा चौर पहुँच जांवदा।

संध्या दा टाइम पूजा आरती तैयार है सी,

गुरू दरबार जाके सीस है निवावंदा।

फिर सच्चे पातशाह दे चरणां ते सिर रख,

रोए-रोए चरण धोए सिर ना उठावंदा।

धरती ते रगड़ नक कढ़ियां लकीरां कई,

बक्शो मेरे सतगुरू मैं भुलां बक्शहवांवदा।

<u>कबित</u>

किती लापरवाही बड़ी दिक्कत उठाई,

मैनूं होश ना आई बापू अगों तों बचा देओ। तोहाडा दास मैं निमाना दर छड के नहीं जाणा, ना कोई होर है ठिकाना मेरी बिगड़ी बना देओ। तोहाड़ा बालक नादान, मैनू नही सी ज्ञान, डाहढा होया नुक्सान, बापू करम कमा देओ।

मैं होया बेहबल मेरी बिगड़ी शक्ल,

जिवें कढ़ी जे अक्ल बापू ओसे तरह पा देओ।

<u>वाक् बापू श्रद्धाराम जी।</u> <u>ख्याल कविशर</u>

कबित

सुन संत राम तैनूं बापू ने माफ कीता,

तेरी खातिर बापू कोलों माफी असां मंगी ऐ। अगों तों तूं किसी दा मजाक ना उड़ाई बीबा, दानेया दी कही होई गल ऐहो चंगी ऐ।

किसे दे मामले विच दखल ना देना चंगा,

बच के ही रहना बीबा दुनिया दो रंगी ऐ।

घटे उम्र वडी कहंदे चलदी नूं गड़ी कहंदे,

उल्टी है दुनियां कहंदे रंगी नूं नारंगी ऐ।

वाक् कविशर

कबित

वाहा वाह सच्चे पातशाह जो मेहर दी नजर कीती,

अधम पापी बंदा दास अपना बना लया।

मेरे जेहे पापी दा ठिकाना नहीं सी होर कोई, तोहाड़ी शरण आके मैं सब कुछ पा लया।

इक वारी दे के दीदार विच सुपने दे,

फिर तुसां कदी वी ना मुखड़ा दिखा लया।

ऐस आस उते हमदर्द पया जीवंदा ऐ,

झलक दिखा दे बापू नन्दाचौर वालेया,

झलक दिखा दे बापू श्रद्धाराम प्यारेया।

ऐह दूसरी कविता वी दास ने अपने सतगुरू देव बापू श्रद्धाराम जी दी उस्तुति करदेंयां होयां ओंन्हा दे जीवन चरित्र ते बापू श्रद्धाराम जी दा प्रकाश उत्सव जन्मदिन मनावन समय 19 विसाख सम्वत् वी सौ इक्की बिक्रमी नूं दरबार ढक्का साहब विच बोली गई। संगत दे सामने पेश कीती गई।

ओम शहंशाह झंडे की सदा ही जय।

सत्य शब्द कवि वल्लों संगत प्रीति वधाई वंजो।

बेंत

पहले करां प्रणाम मैं सतगुरां नूं, गुरां बांझ ना गति इन्सान दी ऐ। गुरां बाझ ना रब दा राह लभे, गुरू पदवी बराबर भगवान दी ऐ गुरां बांझ मनुष दा धिग जीवन, ऐस तों जिन्दगी अच्छी हैवान दी ऐ। गुरां

बांझ नां जीव नूं मिले शांति, गुरू जोत जगावन ज्ञान दी ऐ, कम्म ओखे तों ओखे सब ठीक होवन, पूरा सतगुरू जेकर सहाई होवे।

जन्म दिन अज बापू श्रद्धाराम जी दा सारी संगत नूं मेरी वधाई होवे।

<u>कविता शुरु</u>

आ गया आ गया अज बापू मेरा आ गया आज दिन खुशी दा आ गया।

(1) मद भरे आकाश ते खुशियाँ दा बद्दल छा गया, सखियां ने मंगल गांदियां कलियाँ ने खिड़खिड़ हसियाँ, मल्हार कोयल छेडेया बदलां चों खुशियाँ वसियाँ, आईयाँ बहारां सोणियाँ, नवीयाँ ने फसलां पक्कियाँ, सी पाप ते उक्सादियां पंजे ने फौजां नसियाँ, ते रूप सोहना वेख के पूनम दा चन शरमा गया। आ गया... आ गया....

(2) पूछो जे मेरे बापू दा की नाम कौन ग्राम है, माता पिता ने कौन ते कैसी ऐन्हा दी शान है। कि ऐन्हा दी तारीफ ते की ऐन्हा दा अनुमान है। कीनी कू शक्ति ऐन्हा दी या आप खुद भगवान है। छोटा है मेरा मुँह ते छोटी जेई जबान है। कमजोर मेरी कलम ते खुद कलम वी हैरान है। औना ही हाँ दस्स सकदा जिन्हा कू मैनूं ज्ञान है। निओटेआ दी ओट ते निमाणेया दा मान है। ऐह सर्वशक्तिमान है ते हर तरह बलवान है। छोटी जेई एक झलक वी जो वेखदा इन्सान है।

हिन्दू कहन अवतार है मुस्लिम कहन रहमान है। जन्मा दे धोवन पाप ते हो जावन्दा कल्याण है। है अथाह सागर ना होवे ऐस दा ब्यान है। इन्सान दे चोले दे विच खुद आप ईश्वर आ गया.. आ गया....

(3) संसार दे विच जिस समय पापां लगाई घात सी ते खलबली सी मच रही बेचैन भारत मात सी। सम्वत् उन्नी सौ पैंताली दिन उन्नी विसाख सी, शुभ नक्षत्र शुभ मुहुर्त लगन शुभ शुभ रात सी। आ गए अवतार बन के, आप खुद भगवान जी, ते नाम रखवाया है ऐन्हा बापू श्रद्धाराम जी। जिथे लया अवतार ऐस दातार सृजन हार ने, नर-नार अट्टी पिंड दे पए जावंदे बलिहार ने। अट्टी निकल के अट्ट चों सुरगा पुरी है बन गया, शोभा ते ऐस दी सुन्दरता राजा इन्द्र वी मन गया। सुते कर्म जो आन के जागे जालन्धर शहर दे, ते मोम हृदय हो गए जेहड़े भरे सी केहर दे। माता ईश्वर देवी दी हर आस पूरी हो गई, गोदी विच ईश्वर आ गए अरदास पूरी हो गई। दर्शन करन गोबिन्द दे जो पिता गोबिन्द दास सी, दर्शना दी ओन्हा नूं डाढी जो लगी प्यास सी। करिश्मे ऐन्हा दे वेख के मैं दंग होके रह गया,वेख जलवा रंग तों नौरंग होके रह गया। ऐन्हा दियां ही कथा ते प्रसंग होके रह गया, जिसने वी दर्शन कर लए मलंग होके रह गया। पापां दियां पंडा चुक के पापी जो दर ते आ गया, आप तां ओ आप ओस दा वंश तर सारा गया। हर आरजू पूरी होई नाले ओ मुक्ति पा गया, बापू श्रद्धाराम जी दे गीत है ओ गा गया आ गया...आ गया....

(4) मेहर दी नजरां दा अमृत छिड़क के संसार ते, जगत जलदा आ बचाया बापू श्रद्धाराम ने। नाम दा प्रचार करके पाप दा संहार करके, पाप तों पीछा छुड़ाया बापू श्रद्धाराम ने। सीकदा होया औलाद नूं जो दर ते ऐस दे आ गया, पुत ओन्हा दी गोद पाया बापू श्रद्धाराम ने। रोगी जो लाइलाज सब डाक्टरां दिते जवाब सन, बेउम्मीदां नूं बचाया बापू श्रद्धाराम ने। बालका सेवक दा डीगा वेखया जद खुं विच, हस्तकमलां ते उठाया बापू श्रद्धाराम ने। बेकस निमाणा बनके जो चरणां ते आके ढह पया, चरणां तों चोक के सीने लाया बापू श्रद्धाराम ने। इक इशारे नाल ही दिता बदल तकदीर नूं, कुदरत दी लिखी नूं मिटाया बापू श्रद्धाराम ने।

त्याग दी तस्वीर ने बैराग धारण कर लिया, ते बाल ब्रह्मचर्य निभाया बापू श्रद्धाराम ने। चमकदे कृपाण खंजर भालेया दे साये हेठ, सैकदी सी जान एक प्यारे तेरे मुरीद दी। अखां दे सुरमे प्रेम अंजन दी दिखाई करामात, कुनबा ओस दा सी बचाया बापू श्रद्धाराम ने। ओखे वेले निश्चा नाल जो कोई करदा याद है, झट पहुँचदे करदे आ साया बापू श्रद्धाराम ने। हर तरह दे कष्ट होन दूर ढक्का साहब विच, ओम दा झण्डा झुलाया बापू श्रद्धाराम ने। दरबार नन्दाचौर विच अजकल रहे बिराज ने, सब पापियाँ दा भार चाया बापू श्रद्धाराम ने। की की मैं दसां खोल के मेहरां दा मींह वरसा गया, आ गया... आ गया... अज बापू मेरा आ गया.. अज दिन खुशी दा आ गया....

मद भरे आकाश ते खुशियां दा बदल छा गया... (इति सम्पूर्ण)

अगे ऐस कविता दी व्याख्या शुरू होई

<u>अंतर्यामी बापू श्रद्धाराम जी महाराज</u>

<u>बेंत</u>

बीबी लाल देवी ज्ञानचन्द फक्कर

शरण बापू दी आई के अर्ज करदे।

इक पुतर बक्शो श्रद्धाराम बापू,

तेरे दर दे हो गए असीं बरदे।

बक्शश करो तां असी ए मन्नत मनी,

नौकर असी तां हां ऐस गुरू घर दे।

एक साल पूरा दोवें पति पत्नी,

ऐथे रह के सेवा रहांगे करदे ।।

बेंत

सतगुरू मेहर कीती पुतर बक्श दिता
ओंदा नाम गुरुबक्श रखान्दे ने।
पति पत्नी दोवें नन्दा चौर जा के,
गुरू दरबार दी सेवा कमावंदे ने।
सेवा विच है जो आनन्द औन्दा,
ऐह गल विरले प्रेम जाणदे ने।
अट्ठे पहर सेवा विच मस्त रहंदे,
शुक्र बापू दा लख-लख मनावंदे ने।
होया साल पूरा सेवा करदेयां नूं,
छुट्टी मंगन बापू पास जावन्दे ने।
जानी जान सतगुरू ने सी जान लिता,
ऐस लई ओह टालदे आवंदे ने।
समां आ गया कारण जो लिखया सी,
बारी खोलन लई फक्कर जी जावंदे ने।
बारी जाम सी मारया इक धक्का,
दूजे धक्के दे नाल गिर जावंदे ने।
गिरे सिर दे भार ओ गली अन्दर,
गिरदयां प्राण पंखेरू उड जावंदे ने।
हमदर्द जो आए जहान उते,
समां आए ते सब टुर जावंदे ने ।।

बेंत

अज तक दरबार विच करे सेवा
बीबी लालदेवी देखो जाइके जी।
ओस नूं सेवा दा बापू ने रंग लाया,

पुतर पोतरे रही खिडाइके जी।

गुरू घर दी करे निष्काम सेवा,

जेहड़ा अपना आप गवाए के जी।

नौ निधियाँ ते अट्ठारह सिधियाँ जो,

रहन ओस दे घर सदा आए के जी।

संसार विच सब तो वडे ते अनोखे सिविल सर्जन बापू श्रद्धाराम जी

बेंत

जेहड़े जिन्दगी तों बेउम्मीद हुए,

दसां ओन्हा दा हाल ब्यान करके ।

गुरूबक्श लाल गाबा माता गंगा देवी,

रहन्दे शहर सहारनपुर आन करके।

गुरूबक्श लाल नूं टी.बी. दा मरज होया, जानलेवा ऐह मरज सुनो ध्यान करके,

देश भर दे डाक्टरां ईलाज कीता

मरज वधदा ही गया हल्कान करके ।

बेंत

सब डाक्टर कहन्दे निराश होके,

ऐस दे बचन दी नहीं उम्मीद माता।

असीं सब तदबीरां लड़ा बैठे,

होर दीसदी नहीं कोई तजवीज माता।

ऐस ते मँहगी तों मँहगी दवाई वरती,

तुसीं आप लयाए खरीद माता।

जिन्दगी ऐस दी ईश्वर दे हथ होई,

पेश गई ना कोई तदबीर माता।

कर्म ऐस दा ऐसे ने भोगना ए,
लिखी जो विधाता तकदीर माता।
कसर अपनी तरफों नहीं कोई छड्डी
दिती हर दवाई अकसीर माता।

बेंत

माता गंगा ऐह सुनके उदास हो गई
पुतर नौजवान होन जा रहया ए।
जीवंदे जी मेरे सामने चला जासी,
अखां अगे अंधेरड़ा छा रहया ए
उम्र मेरी जेह ऐस नूं लग जावे,
हे भगवान की तेरा घट जा रहया ए।
बक्शनहार है तूं बक्श दे पुतर,
शुक्र तेरा मैं सदा गुजारेया ए।

बेंत

करनहार सतगुरां दे खेल देखो,
सहारनपुर बापू यज्ञ ते आवंदे ने।
गंगा देवी माता जी नूं पता लगा,
आके चरणां ते सीस टिकावंदे ने।
कर दण्डोत प्रणाम ते डीग चरणी,
माता गंगा जी वास्ते पावंदे ने।
बक्शनहार है तूं मैनूं बक्श पुतर,
श्रद्धराम जी खड़े मुस्करावंदे ने
भन बोतलां सुट्ट दवाईयाँ नूं
अगो बापू जी ऐह फरमावंदे ने
जेड़ा शरण आवे तिसे कंठ लावे

शरण आए दी पैज रखावंदे ने।

वाक् बापू श्रद्धाराम जी

बेंत

प्रातःकाल इशनान कराके ते लयाके
हवन ते ओस नूं बिठा माता
इक जल दी बोतल वी लै आवीं
बापू देनगे ओस नूं बना माता
नाम अपना कदी वी लैन नाहीं,
कहन्दे बापू जी करन शफा माता
बापू चाहवनगे ठीक हो जावसी गा
श्रद्धाराम जी दिता फरमा माता।
दया दृष्टि कीती श्रद्धाराम बापू,
गुरूबक्श लाल नूं लया बचा माता।
सिविल सर्जन बापू श्रद्धाराम मेरे,
ऐह ने दया दा सागर अथाह माता।

सर्व धर्मों के हितैषी बापू श्रद्धाराम जी

दोवैया छंद

बैंड मास्टर मुसलमान एक बापू दा सी चेला, सेवा ओह निष्काम करे जद आवे बापू दा मेला। पीर बक्श सी नाम ओसदा बापू दा सी प्यारा, सेवा सी दरबार दी करदा ओस दा कुनबा सारा। मिल अंग्रेजां नाल मुसलमानां की गुल खिलाया, करके टुकड़े देश अपने दे पाकिस्तान बनाया। पछमी पंजाब दे सारे हिन्दू हिन्दुस्तान पए आवन, पूर्वी पंजाब दे सारे मुस्लिम पाकिस्तान पए जावन। बैंड मास्टर ने बापू नूं आके अर्ज गुजारी, कुनबा मेरा कैम्प जलन्धर पहुँच गया गिरधारी। रहना मैं तोहाडे चरणां विच पाकिस्तान ना जावां, मन कहन्दा रहके ऐथे ऐस दर दी सेव कमावां। कृपाणा ते खंजर बरछे लै के धाड़ा भज्जन, मुसलमान जो नजरी आवे ओसे नूं चां वढ्ढन जान मेरी पई कम्बे बापू कीवें जलन्धर जावां। जाके ओथों अपना मैं वापस परिवार लयावां। करो वसीला कोई हिला सतगुरू मेरे प्यारे कुनबा वापिस किवें लयावां

घर वाले जो सारे अखां दे सुरमे दा बापू करिश्मा नवा दिखाया शीशी एक सुरमचू बापू ओस दे हाथ फड़ाया पा लै अखां दे विच सुरमा बेधड़क तूं जावीं तैनूं कोई ना वेखेगा तूं सब नूं वेखदा जावीं चिट्ठी एक बापू ने लिखी ओस दे हथ फड़ाई जा दिखावीं अफसर नूं करसी ओह तेरी भलाई। सुरमा पा के चल पया ओथों वेखे अजब नजारा भाले बरछे कृपाण दा पैंदा जाए लिशकारा कोलों दी सब लंघदे जावन ओस नूं कोई ना वेखे ओह पया वेखे सारेयां नूं बापू दे खेल अनोखे पैंती कोस सफर ओह करके पहुंचया जाए जालंधर कैम्प कमांडर नूं जा मिलेया रिफयूजी कैम्प दे अंदर। बापू जी दी चिट्ठी ओस ने अफसर नूं पकड़ाई, वेखदयां नाल ओह चिट्ठी ओसने मस्तक उते लाई पढ़ के चिट्ठी आदर कीता जलपान करवाया हुक्म लगा के वर्करां नूं कुनबा उसदा बुलवाया फौजी नाल देवां दो तोहड़े घर पहुँचा के आवन अड़चन ना कोई राह विच आवे बच्चे ना घबरावन बैंड मास्टर हथ जोड़ के अफसर नूं बतलाया सुरमे वाला नया करिश्मा बापू दा समझाया। फौजियाँ दी नहीं लोड़ असां नूं बापू ने रखवाले

साडे सिर ते हथ ओन्हा दा बड़े ने शक्तियाँ वाले

बड़ी सहाय करी तुसां ने हां मशकूर तोहाडे

वक्त कढके दर्शन देना आके घर असाड़े, विदा होए तां अफसर ने मास्टर नूं कहया सुना के लख लख नमस्कार असाड़ी बापू जी नूं करना जाके अज तक ओह परिवार ओस दा बैंड दी सेवा करदा। होया ऐह प्रसंग समाप्त हमदर्द बापू दा बरदा।

दोहरा

करो रुकावट दूर प्रभ अपनी कृपा धार अगली कथा चला देयो हमदर्द की सुनो पुकार।

<u>सेवकां दे रक्षक बापू श्रद्धाराम जी</u>

<u>बेंत</u>

सेवक बापू दा इक सोहनलाल सज्जनों

पिंड आदरामान निवास करदा

गुण गावंदा बापू दे भजन बोले,

सतगुरू बचना ते पक्का विश्वास करदा।

ओखे वेले वी ओह कदी डोलदा ना,

सतगुरू चरणां दे विच अरदास करदा। निश्चा पक्का ओस दा श्रद्धाराम जीते,

बापू किसे नूं नहीं निराश करदा।

कारज होवंदे ने पूरे संगतां दे,
बापू दर ते जो वी कोई आस करदा।
सुखी रहन संसार दे विच सेवक,
बापू जमा तो बंद खलास करदा।

बेंत

बालक पिंड दे अपने पशु लै के
जा के जंगल दे विच चरावंदे ने।
सोहनलाल दा मुंडा वी जावंदा सी,
पशु शाम नूं लै के घर आवंदे ने
एक दिन दा वाकेया की होया,
मुंडे हँसदे खोडदे गावंदे ने
जंगल विच पुराना सी खू खण्डर
मुंडे ओस विच झातियाँ पावंदे ने
पैर फिसलया बालक सोहनलाल दे दा
डिगा खू विच मुंडे घबरावंदे ने
सारे दौड़ के आ गए पिंड अन्दर
पिंड आके ते रौला पावंदे ने
मुंडा सोहन दा डिग पया खू दे विच
बंदे पिंड दे इकट्ठे हो जावंदे ने
किसे टोकरी ते किसे लया रस्सा
सारे दौड़ के खू वल आवंदे ने।

बेंत

आपस विच विचारदे करन गलां
मुंडा मरेगा के बच जावसीगा
पुतर मरन जवान ना दुश्मना दे

ऐस नूं आप करतार बचावसीगा
सोहन पया करे अरदास मन विच
झोली खैर मेरी बापू पावसीगा
मेरे सतगुरू ने बड़े दयालु यारो
होसी सो जो ओस नूं भावसीगा।

बेंत

आके खू ते वेखेया अजब करिश्मा
मुंडा खड़ा दीवार दे नाल होया
सोहनलाल ए वेख प्रसन्न होया,
कहन्दा सतगुरू मेरा दयाल होया।
सारे वेख के खुशी मनावंदे ने,
नाले आखदे यारो कमाल होया।
कई आखदे खू विच पानी थोड़ा,
तां ऐह खू विच खड़ा ए बाल होया।

बेंत

रस्सा टोकरी खू विच पा दिती,
कहन्दे टोकरी विच बैठ जा बेटा
असी लवाँगे कढ हुन बाहर तैनू
तैनू लया भगवान बचा बेटा
मुंडा बैठ गया विच टोकरी दे
सबने बाहर नूं खिच लया बेटा
भिजिया होया सी पैर तों सिर ताईं
ऊपर खड़ा किस तरह भीज गया बेटा।

बेंत

बालक आखेया पानी है बहुत गहरा

थले गया मैं डीगदयां सार बापू
जदों डीगेया मैं घबरा गया सी
मेरे मुँह चों निकली पुकार बापू
ओम बापू जी आके बचाओ मैनूं
झट आ गए पहुंच गई तार बापू
मेरे पैरां थले ओन्हा हथ दिते
आप खड़े रहे पानी विचकार बापू
हस्त कमलां ते मैनूं सी चुक रखेया
तुसीं आए जद कढेया बाहर बापू
फिर पता नहीं किये अलोप हो गए
ऐस गल दी मैनूं नहीं सार बापू
घर आपने ओन्हा दी है फोटो
करो चलके सारे दीदार बापू
ऐह गल सुनके सारे हैरान होए
ऐसे गुरां तों जाइए बलिहार बापू ।

<u>बेंत</u>

पिंड सारा ही आ गया दर्शनां नूं
विरले संत ने ऐसे जहान अन्दर
आदरामान किथे नन्दाचौर किथे
रखया किती आके बियाबान अन्दर
मुंडे आके फोटो ते हथ रखेया
ऐह बापू ने मेरे ध्यान अन्दर
संगत लाए जयकारे ते धूम पै गई
श्रद्धाराम जी बापू दी शान अन्दर ।

<u>बेंत</u>

सोहनलाल ने मन विच विचार कीता
भरिए हाजरी बापू दरबार जाके
धनवाद करिए श्रद्धाराम जी दा
होर बापू दे लइए प्यार जाके
ओस ने एक बुला लया ढोल वाला
संगत होर वी हो गई तैयार आके
झटपट सारे नन्दाचौर पहुँचे,
ढोल वजदा सुनेया सरकार आके
जानी जान अन्जान बन पूछदे ने
पैंदा ढोल दा केहा धमकार आके
पिंड साड्डे ना किसे दी है शादी
कौन लावन्दे पए जयकार आके।

<u>बेंत</u>

पिंड वालेयां दसेया महाराज जी नूं
सेवक आपजी दा इक आ रहया ए
सोहनलाल है आदरामान वाला
संगत कर इकट्ठी ऐदर आ रहया ए
जोर नाल जयकारे पए लावंदे ने
ढोल वाला वी ढोल वजा रहया ए
जाणी जान सतगुरू शक्तिमान सतगुरू
शुक्र बापू दा लख लख बजा रहया ए
कहंदा सतगुरू मुझ ते उपकार कीता
धनवाद तोहड़ा करन आ रहया ए
पहुँच गया दरबार दे विच आके
सतगुरू चरणां ते सीस निवा रहया ए

बेंत

हंजु भर के प्रेम दे नैत्रां विच

भजन बापू दे गुणां दे गावंदा ए

करिश्मा बापू दा सारा बयान करदा

हड बीती जो सारी सुनावंदा ए

सतगुरू आखदे असी की करन जोगे

बापू आप ही खेल वरतावंदा ए

सच्चे पातशाह तोहाडियाँ तुसी जानो

तोहाडा भेद हमदर्द ना पावंदा ए।

भजन

मुकन्द छन्द

बापू दे मन्दर विच आओ प्यारेओ

मुँह मंगियां मुरादां एथो पाओ प्यारेओ

(1)जीवन एह झूठा झूठा संसार है इको नाम सच्चा सच्चा करतार है गुण श्रद्धाराम जी दे गाओ प्यारेओ मुँह मंगियां....

(2)बंदा ओही चंगा जेहड़ा मिलनसार है गुर चरनां दे नाल जिसदा प्यार है रट ओम नाम दी लगाओ प्यारेओ मुंह मंगियां...

(3)छडडना जहान मुड़के नहीं आवना फल अपने कर्मा दा आप पावना करो अच्छे कर्म सुख पाओ प्यारेओ मुंह मंगियां...

(4)मीठा बोल नीवां होके चल बन्देया मुक्ति दा तांहीं मिले फल बन्देया नाम दी समाधियाँ लगाओ प्यारेओ हमदर्द नूं नाल लैके आओ प्यारेओ मुँह मंगियां....

(5)अच्छे कर्मा दा फल सुख मिलदा मन्दे कर्मा दा फल दुख मिलदा सेवा गुरू घर दी कमाओ प्यारेओ मुँह मंगियां....

(6)दुनियां दे धन्धेयां नहीं जान छड़नी आखर नूं जमा तेरी जान कढनी जमा कौलो जान नूं छुड़ाओ प्यारेओ मुँह मंगियां...

(7)बापू दी दयालता दा मुल कोई ना ऐसा है एह तीरथ एन्दे तुल कोई ना नाल हमदर्द दे आओ प्यारेओ मुँह मंगियां....

दिलां दियां जाननवाले बापू श्रद्धाराम जी

दोहेरा

ओम बापू दे शिष सी गुसांई रामलाल

ओम बापू दे यज्ञ ते औदे सी हर साल

दोहा

शिष्य ओन्हा दे देसराज अमृतसर अस्थान

गुर मर्यादा दा बड़ा रखदे रहे ध्यान।

बेंत

अमृतसर दी संगत हर साल ओन्दी

ओम बापू दे गुण सब गावंदे ने

बस भरके संगत दे नाल सज्जनों

देसराज मंहत लयावंदे ने

राममूर्त्ति सेठ अमृतसर वाला

ओसने पूछेया एह किथे जावंदे ने

अगो किसे प्रेमी जवाब दिता,

नन्दाचौर एह यज्ञ ते जावंदे ने।

गुरू एन्हा दे बड़े भरपूर बीबा

ओथे जाके मुरादां एह पावंदे ने

श्रद्धाराम जी ओन्हा दा नाम सज्जना

करनी वाले ने बड़े बतावंदे ने।

बेंत

राममूर्त्ति मन विच विचार कीता

इक वार जाके दर्शन पा लवां मैं
जेकर सच्च है के ओह हैन पूर्ण
गुरू अपना ओन्हा नूं बना लवां मैं
अखीं वेख लैसां अते परख लैसां
फिर चरणा ते सीस निवा लवां मैं
नाम दान दी याचना तां करसां
पहले मन नूं अपने मना लवां मैं ।।

बेंत

अमृतसर तों संगत दे नाल आया
आके देखेया जलवा नूरोनूर बापू
सुध बुध सब अपनी भुला बैठा
बैठे देखे जद हाजर हुजूर बापू
मन चंचल ने सबनूं अधीन कीता
एह किसे दा नहीं कसूर बापू
आखे लागके मन दे सोचदा एह
परीक्षा लवांगा मैं जरूर बापू
तीन साल बराबर ओह रहेया ओन्दा
करिश्मे कई दिखाए भरपूर बापू
जानी जान तां दिलां दी जानदे सन
कैसा परीक्षा दा है एह दस्तूर बापू ।।

वाक् श्रद्धाराम जी अपने मन नाल

ख्याल कविशर

बेंत

तीन साल ऐंदा मन मनेआ नहीं
परीक्षा असी वी लवांगे आ बेटा

गल करांगे वक्त जद आवसीगा
तैनूं देवांगे असी समझा बेटा
चौथे साल आके चरण पकड़ लिते
बापू अपना लवो बना बेटा
बापू आखदे ने राममूर्त्ति नूं
मन अपना लै मनां बेटा
राममूर्त्ति आखदा सतगुरू जी
मैं कुर्बान कुर्बान कुर्बान होया
तुसीं गुरू मेरे मैं हाँ शिष्य तोहाडा
पूरा पूरा मैनूं इतमिनान होया
हुन करो कृपा नाम दान देवो
तां मैं जानांगा मेरा कल्याण होया
सतगुरू आखदे करांगे उस तरहा ही
जिवें बापू दा सानू फरमान होया।

<u>वाक् श्रद्धाराम जी</u>

<u>बेंत</u>

तैं तां देख लिता अते परख लिता
जरा असी वी लइए इम्तिहान तेरा
नाम लैन दे काबल तूं है या नहीं
कुछ तां हो जाए सानू ज्ञान तेरा
हुन लैके प्रशाद ते घर जाओ
अगले साल फिर रखांगे ध्यान तेरा।
कड़हे दूध नूं ही जाग लगदी ए
कड़ जाएगा होवेगा मान तेरा।।

बेंत

अगले साल फिर अगले कह टालदे रहे

तीन साल एस तरहां व्यतीत हो गए

महान हस्ती दा लैन इम्तिहान आए

राममूर्त्ति खुद ठण्डे शीत हो गए

चौथे साल आके चरण पकड़ बैठा

कहन्दा मेरे अंधेरे अतीत हो गए

नाम दान देवो तां मैं चरण छडां

मेरे भाग क्यों मेरे विपरीत हो गए

सागर दया दे बापू नूं दया आई

कहन्दे एह तां हुन बिल्कुल विनीत हो गए

देके नाम दा दान निहाल कीता

राममूर्त्ति दिलों नवनीत हो गए।

बैंत

लैके बापू तों नाम ते खूब जपेया

नियम अपना ऐसा बना लया ए

हर संक्रान्ति आके करे दर्शन

नन्दाचौर दरबार विच आ रहया ए

नाले कढे दसवन्ध कमाई विचों

हर महीने ओह आके चढ़ा रहया ए

आशीर्वाद लै जावंदा सतगुरां तों

जीवन अपना सफल बना रहया ए

अंग संग सतगुरू श्रद्धाराम जी ।।

बेंत

इक वार घटना ऐसी घटी आके
जिस नूं सुनके दिल घबरावन्दा ए
राममूर्त्ति दी वडी बहन चंचल
ओदे मन विच ख्याल एह आवन्दा ए
हर संक्रान्ति नूं जावे वीर मेरा
नन्दाचौर जाके दर्शन पावन्दा ए
इस वारी मैं वी ओहदे नाल जावां
दर्शन करां मैं वी दिल चाहवंदा ए
कढेया असां दसवन्ध जो सतगुरां दा
ओह तां होर इकट्ठा होंदा जावन्दा ए
जाके असी अमानत पहुँचा आइए
वीर हर महीने पहुँचावंदा ए।

<u>बेंत</u>

टेलीफोन लुधियानयो कर दीता
इस वार साड़े घर आ वीरा
इकट्ठे चलांगे एथों नन्दाचौर आपां
दोवें रल के भैण भरा वीरा
हिस्सा बापू दा जो माया होई इकट्ठी
ओह वी देविए ओथे पहुँचा वीरा
नाले कर आइए दर्शन सतगुरां दे
अगों बापू दी जिवें रजा वीरा।।

<u>बेंत</u>

आई संक्रान्ति तों इक दिन पहलां
दोवें बहन भारा घरों चलदे ने
टिकट लै लुधिआनयो रेल दी ओह

सीट गड्डी विच अपनी जा मलदे ने
स्टेशन श्याम चौरासी ते जा उतरे
स्टेशन अंदरों बाहर निकलदे ने
श्यामा पहुंचदेयां तक ही शाम हो गई
टाइम रह गए घड़ी पल दे ने।

दोहेरा

श्याम चौरासी पिंड सी चार कोस अनुमान
उस तों अगे नन्दाचौर चार कोस तूं जान।।

बेंत

शाम चौरासी शाम चौरासी पया बोलदा सी
तांगे वाला इक वाजां पया मारदा सी
पूछदा सेठ तों तुसां किथे जावना ए
नाले होर सवारियां भालदा सी
एहना कहया असां नन्दाचौर जाना
कहंदा बैठो पया सीटां नूं झाड़दा सी
अटैची एहना दी तांगे दे विच रखी
नाले घोड़े नूं पया पुचकारदा सी।

बेंत

सेठ आखदा सानूं पहुँचा जल्दी
सानू पहले ही हो गई देर भाई
लोए लोए तू दे पहुँचा सानू
एदर तांगे नूं लै तू फेर भाई
सालम तांगे दे पैसे तूं लै साथों
क्यों करना ए सानू अवेर भाई
कोचवान ने तांगे नूं तोर लिता

मन विच लावन्दा पया गवेड़ भाई।

बेंत

लद्दी होई सी जेवरां नाल चंचल
तांगे वाले दा दिल बेईमान होया
पैसा नकद वी काफी सी पास एहना
तांगे वाले नूं सारा ज्ञान होया
सोचां सोचदा ए की तरकीब लाइए
लूट लवां है जितना सामान होया
मेरे अकल्ले दे वस दा कम्म नाही
साथी होर कई लै सावधान होया ।।

बेंत

पिंड शाम चौरासी विच पहुँच के ते
ओथे एह बहाना बनावंदा ए
गली विच खलार के घोड़ा तांगा
घोड़े लई भौं दाना लयावंदा ए
पिंड विच जाके गुंडे कर इकट्ठे
ओहना नाल एह मता पकावंदा ए
मालदार सामी अज हथ आई
कत्ल करके लूटना चाहवंदा ए
पिंडो बाहर निकले जद मील अधा
अगों जंगल सारा आ जावंदा ए
गुंडे अगों दी निकलके रोकदे ने
तांगे वालेयां किथे तूं जावंदा ए।

बेंत

ओन्हे आखेया मैं नन्दाचौर जाना

गुंडे कहन्दे असां वी ओथे जावना ए

सबने बरछे कृपाणा सी हथ फडियां

तांगा रोक तें सानू लै जावना ए

तांगे वाले केहा ऐहना कीता सालम तांगा

कहंदे चुप रहो भला जे चाहवना ए

तांगा रोक के बैह गए विच चारे

कहन्दे आपस विच किथे रुकावना ए

तांगे वाले इशारे दे नाल केहा

अगे घना जंगल आ जावना ए

कत्ल करके एहना नूं माल सारा

लया के आपस विच वंड के खावना ए।।

बेंत

राममूर्त्ति ते ओहंदी भैण चंचल

हालत वेख के दोवें घबरावंदे ने

सूरज छुप गया सी होईयां रोल बोलां

एह पसीने पसीने हो जावंदे ने

आई मौत पई सामने नचदी ए

सोचां सोचदे वक्त बितावंदे ने

ऐथे कोई साड़ा मददगार नहियों

नाम बापू दा पए ध्यावंदे ने

हुण तां बापू जी तुहाडा ही आसरा ए

अपने दिल दी तार पहुँचावंदे ने

तार पहुँच गई नन्दाचौर दे विच

देखो बापू जी किवें बचावंदे ने

बापू सोन लगे जदों छत उते

एकदम उठ के बैठ जावंदे ने

गुरांदिता जी भगत नूं आवाज मारी

प्रीतम सिंह दे वल भिजवावंदे ने।

बेंत

जाके पीतु नूं कहो कि बस लैके

शाम चौरासी दे वल ओह जाए छेती

आठ दस बन्दे पिंड दे नाल लैके

हथां विच हथियार लै जाए छेती

राममूर्त्ति तांगे ते आ रहया ए

ओस नूं बस विच बिठाके लै आए छेती

भगत गुरांदिते दा सी सरीर भारा

जल्दी जावे एह देर न लाए छेती।

बेंत

दो मिनट वी नहीं इंतजार कीती

सतगुर भगत दे पीछे पीछे आवंदे ने

नंगे पैर दौड़े जोड़ा नहीं पाया

मन विच बेचैन हो जावंदे ने

दृश्य वेख एह सच्ची सरकार जी दा

सेवक नैना चों नीर वगावंदे ने

अपने सेवकां लई जानी जान सतगुरू

देखो की की कष्ट उठावंदे ने।

राममूर्त्ति ते चंचल मन ही मन विच कह रहे ने: जो बिगड़े सो तेरा नाथ मेरा क्या बिगड़े।।

और मन ही मन विच एह शेयर बोल रहे ने:

शेयर

ठोकरें खाई बहुत झूठी जगत के प्यार पर इसलिए आते हैं हम बापू जी तेरे द्वार पर।

अब हमें बचाओ ना बचाओ यह तुम्हारे हाथ है गर ना बचाओगे तो बदनामी तुम्हारी नाथ है।

बेंत

भगत गुरां दिते जा आवाज मारी,
प्रीतमसिंह तुसीं जल्दी बाहर आओ
महाराज जी ने एह है हुक्म दिता
बस शाम चौरासी वल लै जाओ
राममूर्त्ति ते ओहंदी भैण चंचल
नन्दाचौर तांगे उते आ रहे ने
खतरे विच है ओहना दी जान बीबा
जल्दी जाओ ओह बड़े घबरा रहे ने
मौसम गर्मी दा सी कपड़े लाह के ते
प्रीतम सिंह जी सोन लई जा रहे ने
जद सुनी आवाज ओस भगत जी दी
झटपट ही बाहर नूं आ रहे ने।

बेंत

प्रीतम सिंह कहंदा कपड़े पा केते
मैं हुने ही भगत जी जावंदा हां
सेठ होरां नूं बस विच बिठा के ते
बापू चरणा विच फौरन लयावंदा हां।

बेंत

पीछे भगत दे खड़े महाराज जी सन
गुस्से नाल बोले जल्दी जाओ पीतू
इतना टाइम नहीं है कपड़े पावने दा
बन्दे अठ-दस नाल लै जाओ पीतू
सारे हथां विच लैके हथियार जाओ

खाली हथ ना कोई वी जाओ पीतू
रस्ते विच इक मिनट वी रुकना नहीं
जाके ओहना नूं धीर बंधाओ पीतू

बेंत

प्रीतम सिंह ने बस स्टार्ट कीती
लाइट ओस दी अगली जगाई एकदम
पिंडों निकली सी बस दूर थोड़ी
बड़ी दूर तक फैली रोशनाई एकदम
गुण्डे आपस विच एह विचार करदे
लंघे बस तां करिए सफाई एकदम
सारा कम्म ही ठीक हो जावसीगा
जदों ऐन्हा दी गर्दन उड़ाई एकदम।

बेंत

सड़क छोटी सी ते प्रीतम सिंह जी ने
बस तांगे दे अगे खलार दीती।
प्रीतम उतर के लघेयां बस अगों
बाकी सारेयां ने छाल मार दीती
सेठ लया पहचान ते पूछदा ए
प्रीतम सिंह ऐदर किथे चलेयां ऐं
प्रीतम आखेया तोहां हां लैन आए
सानू बापू जी तोहाडे वल घलेया ए
एह गल सुनके गुंडे मार छालां
चारे जंगल दे वल नूं नस गए
तांगे वाला फरेबी एह आखदा ए
यारों असीं तां अज फस गए

प्रीतम सिंह बिठा के सेठ जी नूं
नन्दाचौर दे विच आ जावंदे ने
मार सकदा कौन हमदर्द ओस नूं
जिनूं सतगुरू आप बचावंदे ने।

वाक् कविशर

ॐ

कबित

आखदे ने दाने ते सयाने सब आखदे ने
गुरां बिना गत कोई मानव ना पावंदा
गुरां दे वचन उते अमल जो करे बन्दा
थोड़ा प्रयास कर मुक्ति नूं पावंदा
सच बोले पूरा तोले धर्म तो जो न डोले
मौत नूं वी याद रखे निर्भय हो जावंदा
ऐसे सतगुरां तों 'हमदर्द' बलिहार जांदा
करके दीदार मन सीतल हो जावंदा।

सतवार कवि 'हमदर्द' वलों

बेंत

सोम सुतेंया उम्र गुजार छड़ड़ी
कदी घड़ी दो घड़ी नाम जपेया ना
मंगल मन मंदर अन्दर मार झाती
कदी प्रभु प्यारे नूं तकेया ना
बुध बुद्धि उते मन ने पाया परदा
उस परदे नूं तै उल्टेया ना
वीर वैरियां पंजा दा बन कैदी

मजा असल आजादी चखेया ना

शुक्र शुतर मन बेमुहार तेरा

पाके नाम नकेल तैं नथेया ना

जिधर होवे मर्जी एस दी लई जावे

हिमम्त जोर नाल एस नूं डकेया ना

शनि शांति किवें नसीब होवे

पूरे गुरां चरणी सिर रखेया ना

एतवार ऐतवार हमदर्द कर लै

सुख सुमिरन बगैर किते रखेया ना

<u>गुरबाणी दे प्यासे सतगुरू श्रद्धाराम जी</u>

<u>बेंत</u>

गुरबाणी दे नाल इतना प्यार है सी

सुखमणी साहब दा रहंदे सी पाठ करदे

अखर भुल चुक कोई जे पढ़े प्रेमी

ओस नूं रोक के ओस ते काट करदे

इक बड़ी हैरानी दा कारनामा

अपनी उम्र जवानी विच आप करदे

गुरू ग्रंथ गुरबाणी दा इक सौ इक

अकेले आप ही बैठ के पाठ करदे ।।

<u>दोवैया छंद</u>

पाठ श्री गुरू ग्रन्थ साहब दा इक सौ इक मेरे मीता सतगुरू श्रद्धाराम जी ने आप अकलेयां कीता पाठ इकावन पूरे होए गला बंद सी होया बोले गुरू हरनाम जी नूं मेरे सतगुरू एह कि होया श्री गुरू हरनाम जी कहंदे श्रद्धाराम प्यारे जिस बाणी दा पाठ तूं करदा ओस दे वेख नजारे मन ही मन विच पाठ करो खुद गला तेरा ओह खोलन सतगुरू दीन दयाल बड़े हैं लग पएंगा बोलन बैठ गए फिर पाठ करन ते मन ही मन विच पढ़दे सतगुरू देव दी कृपा दे नाल गले दे खुले परदे कीता सी जो संकल्प एहना हमदर्द ओह

पूरा कीता पाठ श्री गुरू ग्रंथ साहब दा इक सौ इक कर लीता ऐसे सतगुरू तों मैं सज्जनों क्यों ना बल बल जावां बाणी नाल प्यार दी मैं कि होर मिसाल सुनावां ।।

बेंत

इक होर सबूत प्रत्यक्ष देखो
गुरबाणी दी फेरी दुहाई सतगुरू
नन्दाचौर जाके अखां नाल देखो
अखंड पाठां दी लड़ी चलाई सतगुरू
दसां नहवां दी अपनी कीरत विचों
माया बैंक विच जमा कराई सतगुरू
ओसदे सूद नाल पाठां दा खर्च चले
रहंदी दुनिया तक चलसी चलाई सतगुरू
पंजां तख्ता ते रोज प्रशाद बनदा
माया पंजा ते जमा कराई सतगुरू
एहना दे नाम दी रोज अरदास होंदी
श्रद्धाराम एह कीती कमाई सतगुरू
आनंदपुर साहब ते केस गढ़ साहब पटना
हजूर साहब तक कीता रिसाई सतगुरू
अकाल तख्त हरमंदर अमृतसर अंदर
पवित्र स्थाना ते माया पहुँचाई सतगुरू ।।

बेंत

सतगुर गद्दी नशीन जद आप होए
लंगर जारी कीता एहना आप सज्जनों
अड्डे पहर ही लंगर ओह है जारी
भूमन शाह दा लंगर कीता मात सज्जनों भूमनशाह आ गया पाकिस्तान अंदर
चलदा लंगर सी ओथे दिन रात सज्जनों।

इक वार अंग्रेज इम्तिहान लिता

ओथे आ गया रात प्रभात सज्जनों।

बेंत

भेस बदल के आया ओस डेरे उते

आके रोटी दा ओस सवाल कीता

अगों लांगरी एह जवाब दिता

लंगर मस्त है ओस ने टाल कीता

श्रद्धाराम जी दा लंगर सदा जारी

दुःखी जीवां दा सतगतुरू ख्याल कीता

लखां तार दिते पापी जग अंदर

लखां कंगलेयां नूं मालामाल कीता ।।

दोहेरा

अरे मूढ़ मन बावरे गुरू चरनी चित धार

जिस कृपा ते मूढ़ तूं भवजल उतरे पार।

बेंत

श्रद्धाराम दे बाद गुरदास राम शर्मा

नन्दाचौर ते गद्दी नशीन होए

मीठी बोली ते शीतल स्वभाव वाले

पुंज शांति दे बड़े मस्कीन होए

जैसा नाम सी गा वैसा काम सी गा

गुर सेवा विच बड़े प्रवीण होए

बनवा के मूर्त्ति अपने सतगुरां दी

ओहनां दे नाम दे विच लिवलीन होए

मूर्त्ति कीती स्थापित दरबार अंदर

जाके वेख लो जे ना यकीन होए

पूजा होवन्दी ए मेरे सतगुरां दी

हमदर्द दे दिल नूं तस्कीन होए

बेंत

मूर्त्तिकार बनाई जेस मूर्त्ति सी

हैसी कौम दा ओह मुसलमान सज्जनों

ओसने अपनी जबानी एह आखेया सी

मैं हैरान कुर्बान कुर्बान सज्जनों

जो जो देखे मोअजजे सतगुरां दे

कर सकदा नहीं मैं ब्यान सज्जनों

करिश्मे कई दिखाए ऐस मूर्त्ति ने

लगा जदों मैं मूर्त्ति बनान सज्जनों

सजदा करां मैं एहना नूं लख वारी

वली अल्लाह मैं एहना नूं जान सज्जनों

है पैगम्बर या खुद खुदा है एह

झूठी नही जे मेरी जबान सज्जनों

बंदा उतना ही दस्स सकदा ए

होंदा बन्दे नूं जितना ज्ञान सज्जनों

'हमदर्द' ने एहना नूं मन्नेया ए

वाली जगत दा खुद भगवान सज्जनों।

दोहेरा

दास कवि हमदर्द नूं सतगुरू तेरी टेक

दोए कर जोड़ है याचना दिजे बुद्ध विवेक ।।

अंतर्यामी बापू श्रद्धाराम जी

बेंत

श्याम दास जी भगत जात सक्कर सुधा

कीती सेवा अटूट महाराज दी जी
सारी उम्र गरीबी दे विच कटी
कीती नहीं परवाह समाज दी जी
परीक्षा कठिन लैंदे अपने पयारेंया दी
रीती चली आई एह है आद दी जी
धन्ना भगत, कबीर, नामदेव, नरसी
सैना नाई ते धू, प्रहलाद दी जी।।

बेंत

इक वारी दा वाक्या सुनो सज्जनों
यज्ञ जेठ दा सी नन्दा चौर दे विच
दिल्ली शहर तौं बस हर साल जांदी
ओस वारी वी गई एसे तौर दे विच
प्यारे लाल जी भगत संत लाल जी ते
शाम दास जी भगत अपनी टौहर दे विच
संगत होर सारी बस भरी होई
आपस विच गलां करदे शोर दे विच।

बेंत

अपने अपने विचार पए दसदे ने
जो जो बापू जी अगे पुकार करनी
शाम दास जी आखदे बापू जी नूं
अपने पुतर दी हालत है यार करनी
इको इक पुतर ओह वी विगड़ चुका
कहसां सतगुरू जी ऐदी सुधार करनी
अपने-अपने ख्यालां विच मस्त सारे
होणी सो जो मेरे करतार करनी।

बेंत

आपस विच ऐह कहके फिर हँस पैंदे
एह है बड़ी हैरानी दी गल यारों
जो जो बापू नूं असी सवाल करना
बिना दसेंया ही करदे हल यारो
जो वी गल अपने मुखों आखदे ने
ओह सकदी कदे न टल यारो
जदों होवांगे पेश सब सतगुरां दे
पता लग जासी सारा कल यारो।

बेंत

बस पहुँच गई नन्दाचौर दे विच
मत्था बापू नूं टेकन सब जावंदे ने
शाम दास ने टेकेया जदों मत्था
अगों बापू जी एह फरमावंदे ने
इक मिनट हो मौन कर दृष्ट देखन
शाम दास जी पए घबरावंदे ने
पिछले जन्म दा है तेरा शाह पुतर
लेखे जन्मां जन्मां दे चले आवंदे ने
लैन वाले ने मंगना पवे देना
देन दार क्यों हिचकिचावंदे ने
देना रौके वी देविए हंस क्यों ना
कई देन तों ही मुकर जावंदे ने
फल पा लिता शाम दास जी ने
सेवा गुरां दी करके जो पावंदे ने
अपना भगत बुला लेया पास अपने

बापू गोदी दे विच बिठावंदे ने।

ॐ

वाक् कविशर

बेंत

पूरन सतगुरू दे लक्ष्ण एह सज्जनों

सब पापां दे झगड़े मुका देंदें।

लैन देन दा चक्कर सब खत्म करके

अपने सेवक नूं एह दुआ देदें।

जो कुछ भोगना सेवक ने नरक अन्दर

सारा एथे ही भोग भुगा देंदें।

शुद्ध आत्मा अतः शरीर करके

बैकुंठ धाम दे विच पहुंचा देंदें।

वाक् कविशर

कबित

रिश्ते नाते जग वाले स्वार्थ दे सारे

सब कूड़ दे पसारे भुल जावीं ना नादान तूं

इको रिश्ता जोड़ होर सारे नाते तोड़

प्रीत गुरां संग जोड़ ओथों पावेंगा ज्ञान तू

गुरू मुक्ति दे दाते नेती नेती वेद गाते

गुरू वाले गति पाते गुरू पूर्ण पछान तू

गुरू देवन, नाम दान जपिए लाके ध्यान

'हमदर्द' होवे कल्याण तां ही पावें निज धाम तू।

दीनों के नाथ सतगुरू श्रद्धाराम जी

बतरज़ इतिहास

बापू श्रद्धाराम जी ने एक सुन्दर प्रथा चलाई ए सवा सवा रुपये दे नाल शादी कर दिखलाई ए बापू दा इक भगत विचारा धियां पंज जवान होईयां घर गरीबी चिन्ता लगी किवें व्याहियां गीयां जान। कीती अर्ज बापू दे अगे सतगुरू परोपकार करो। नैय्या है मझधार मेरी बापू जी बेड़ा पार करो। पंज बेटियाँ किवें व्याहवां घर तां भुन्नी भंग नहीं। बिना आप दे कोई ना सहारा कोई वी अंग-संग नहीं। बापू जी नूं आई दया ते कहन्दे तूं घबरावीं नूं. जाके बह जा घर अपने होन होर किते तूं जावीं ना। एक परिवार सेवक बापू दा ओहना नूं बुलवांदे ने। मुंडा तोहाड़ा असां व्याहना एह पए हुकम लगांदे ने। हुक्म मनेया सतगुरू जी दा सतबचन कह जांदे ने। जिन्हा गुरां दी आज्ञा मनी ओहो ही सुख पांदे ने। परसों पूर्णमासी है दोनों परिवार आ जाओ जी, कोई जंज ना बाजा गाजा खुशियाँ खूब मनाओ जी। सवा रूपया मत्था टेको फेरे चा फिर करवाओ रोटी पानी लंगरों खा के अपने-अपने घर नूं जाओ। नम्बर आया दूजी दा बापू ने खेल रचाया ए। गरीबी अते अमीरी दा सारा ही भेद मिटाया ए। जमींदार एक सौखा घर सी जो बापू दे प्यारे सी। हुकम मनेयां ओहना ने वी, जो बापू फमा रहे सी। माघ महात्म पर्व चल रहया जो है चलाया बापू ने। जंगल दे विच मंगल कर बैकुंठ बनाया बापू ने। ऐसे महीने दोहां धिरां दे बन्दे दस आ जाओ जी। कोई जंज ना बाजा गाजा खुशियाँ खूब मनाओ जी। सवा रूपया मत्था टेको फेरे चा फिर करवाओ। रोटी पानी लंगरों खा के अपने अपने घर जाओ।

<u>बेंत</u>

सेवक बापू दा बड़े प्यार वाला।

रामलाल मुटनेजा सी नाम सज्जनों

करदा रहे अराधना हर वेले,

नाम सिमरदा सी सुबह शाम सज्जनों,

लिखदा भजन सी बापू दे बड़े सुन्दर,

सेवा बापू दी करे निष्काम सज्जनों

तीजी लड़की दी कीती सगाई ओस घर

सच्चे पातशाह बापू श्रद्धाराम सज्जनों,

रामलाल दे लड़के ने जिद कीती,

हंसराज है जिसदा नाम सज्जनों।

कहंदा लैके मैं जाणी बारात अपनी

घोड़ी चढ़के बनावनी शान सज्जनों,

वचन सतगुरां दा जेहड़े ना मनन।

दु:खी होवंदे विच जहान सज्जनों।

गुरू आज्ञा दा पालन करन जेहड़े,

सारी जिन्दगी ओह सुख पान सज्जनों।

बेंत

रामलाल नूं कहन्दे महाराज मेरे,

अपने पुत नूं एदां समझा बीबा।

काहनूं करें बरबाद व्यर्थ पैसा

तूं अपना घर बसा बीबा।

खर्च करना जो पैसा व्याह उते।

कारोबार ते ओस नूं लगा बीबा।

जस खाट नै सारे संसार उते,

ऐस विच है तेरा भला बीबा।

बेंत

रामलाल कहन्दा महाराज जी नूं,

कई तरहां नाल ओस नूं समझाया मैं,

जेह ओह नहीं मनदा तुसी मन जाओ

तुहाडे अगे है वास्ता पाया मैं।

कर लवे ओह अपना शौक पूरा,

पहला पहला है पुत व्याहया मैं

होनी होके रहवे हमदर्द कहन्दा,

ऐस दे अगे है सीस निवाया मैं।

बेंत

महाराज कहन्दे जेह ओह नहीं मनदा

असी झालंगे तुहाडी बारात बीवा

विक जाऊ मकान हिसार वाला,

याद रख लवीं साडी बात बीवा

हो गए पूरे थोड़े दिनां अंदर,

बापू कहे सी जो मुख वाक बीबा

विक गया मकान हिसार वाला

तंग रोटी तों हो गया आप बीवा।।

बेंत

शामदास नाल डाढा प्यार सी गा

रामलाल दा जिवें सी वीर प्यारा

रामलाल ने ओस नूं गल कीती

कोई कर तदबीर कोई ला चारा

हुक्म वापू दा मोड़ के दुःखी होया,

अपनी गलती दा है पछोता भारा

बड़ी भूल होई अक्ल गुल होई

किस्मत मेरी दा है डूब गया तारा,

शामदास ने आखेया मंग माफी

नन्दाचौर जा नाक रगड़ यारा

मेहनबान होसन दयावान बापू

दुःख कटेया जाएगा तेरा सारा।

वाक् शामदास ख्याल कविशर

बेंत

पूर्ण संतां दा वाक् अटल होन्दा

खाली वाक् ओह कदे ना जावंदा ए।

करिए लख तदबीर तकदीर जेहड़ी,

लिखी संतां दी कोई ना मिटावंदा ए।

तुसां जरा वी ना विचार कीता।
हुक्म गुरां दा जेहड़ा पलटावंदा ए।
कीता आप तजुर्बा हमदर्द ने वी,
सारी जिन्दगी ओह पछतांवदा ए।
रामलाल सज्जनों नन्दा चौर जा के,
बापू चरना ते सीस निवावंदा ए।
नक रगड़ के मंगदा माफियां ते
भुलां अपणीयां सब बख्शवांवदा ए
बख्शनहार सतगुर तां हन बख्श देंदे,
जो वी दीन बनके दर ते आवंदा ए
ऐह ने दया दे सागर अथाह सज्जनों
कोई एहना दा अंत ना पावंदा ए।

<u>बेंत</u>

शहनशाहां दे शहनशाह सतगुरू दी
न्यारी लीला सब वेख हैरान होए।
पैसे वाले धनवाना नूं ज्ञान होया।
बापू दर ते आके निर्माण होए।
धनवाना गरीबां दे मेल कीते।
धियां वाले सी कई परेशान होए।
हमदर्द बापू ने कईयां दे व्याह कीते।
कई घर एस तरह शादमान होए।

<u>बेंत</u>

एक प्रेमी ने कहया महाराज जी नूं
सच्चे पातशाह मैं चिंतावान होया
नामदान तां तुसां तो लै लिता।

जपेया जांदा नहीं मैं परेशान होया।

पै जासां चौरासी दे गेड दे विच

जे न बापू जी मेरा कल्याण होया

कोई दसो उपा मुक्ति पावने दा

सोचां सोचदा हां हैरान होया।

बेंत

उत्तर दिता महाराज ने सुनो बेटा,

तैनूं जरा घबरावन दी लोड़ नाही,

घर बापू दे कमी ना किसे गल दी,

किसे चीज दी ऐथे कोई थोड़ नाहीं।

सेवा सिमरन दो पौड़ियां मुक्त दीयां

बिना एहना दे तीजी कोई होर नाहीं।

सेवा करिए तां लगदा मुल कोई ना,

सिमरन करिए तां लगदा जोर नाहीं।

कबित

सेवा दा नमूना सच्चे पातशाह दिखाया सानूं संगत निवास संगत वास्ते बनाया सी। अपने हस्त कमलां नाल रोड़ी उथे कुट्टी जाके, संगत दे इश्नान लई पंप लगवाया सी। संगत निवास दियां नालियां दी गन्दगी दा, कूड़ा अपने हथां नाल ओहना ने उठाया सी। हमदर्द अखां सामने नजारा वेख शर्म आई, पत्नी नूं नाल लैके सेवा विच लाया सी।

वाक् कविशर। हाल कविशर

कबित

सुपने दे विच वी नहीं असां कदी सोचेया सी साडे उते मेहरां वाली होसी बरसात जी बैठे ही बिठाए घर लैटर सी आए, फिर नौकरी सरकारी सी लगाई बापू आप जी। बी.ए., एम.ए. पढ़े धक्के खावंदे पए नौकरी नूं, कल्पदे बेचारे बड़ा होंदा संताप जी। दोवें पुत दास दे बजावंदे ने ड्यूटी नूं, नौकरी सरकारी उते दोवें तैनात जी। चंगा कीता होया कोई पूर्व दा कर्म जागे, तां ही पूर्ण संतां नाल होंदा है मिलाप जी। हमदर्द जेहे निमाणेया ते मेहर दी नजर कीती, बापू श्रद्धाराम जी दी सारी करामात जी।

वाक् कविशर

कबित

दास नूं जो बख्शेया परिवार सच्चे पातशाह जी एहना बख्शशां दे सदा रक्षक वी आप हो तुसी कृष्ण राम ते भगवान वी हो तुसी साडे सब कुछ तुसी हो तुसी ही माई बाप हो।लोक ते परलोक दी है जिम्मेदारी तुहाडी सारी, आए शरणागत दे हरदे तीनों ताप हो दास हमदर्द दे ओगणां नूं देखना ना। बख्शनहार बख्श लैना बख्शन वाले आप हो।

कुंडली छंद

किस्मत नाल है होवन्दा महापुरुषां दा मेल। अच्छा कर्म मिलावंदा कर्मा दा सब खेल, कर्मा दा सब खेल कर्मगति है एह सारी, दास कहे 'हमदर्द' प्रभु दी लीला न्यारी।

वाक् कविशर

बेंत

संत कई मिसालां प्रमाण देके

बार-बार पए सानू समझावंदे ने।

मानव चोला दुबारा नहीं हथ ओणा।

जपदे नाम ते साहनू जपावंदे ने।

जपके नाम भवसागरों पार होसन

जेहड़े गुरां नाल प्रीत लगावंदे ने।

हमदर्द जेहे पापी जीव सज्जनों,

धक्के विच चौरासियाँ खावंदे ने।

ॐ

वाक् कविशर

कबीत

आवागमन चौरासी दे गेड़ विचों,

जेकर बचनां चाहे इन्सान सज्जनों

जपिए नाम एकान्त विच बैठ के ते

हो जावसी साडा कल्याण सज्जनों

पूरे सतगुरू मार्ग दिखा दिता
चलिए असी ते धरिए ध्यान सज्जनों
शुकर करिए बापू श्रद्धाराम जी दा,
जिहनां दिता है नाम दा दान सज्जनों।

वाक् कविशर

बैंत

दो पौढ़ियां सतगुरां दस्सियां जो
इक सिमरन दूजी सेवादार होना।
दोहां विचों चढ़ जाविए इक पौढ़ी,
तां ही भवसमुद्रों पार होना।
प्यारेलाल ते भगत संतलाल वांगों
सेवा वास्ते सबने तैयार होना।
कीती दोहां परिवारां अटूट सेवा,
बेड़ा निश्चय है ओहना दा पार होना।

वाक् कविशर

बेंत

सेवक बापू दे वधा ने हीरेयां तों
गुरू घर दी जिहनां कमाई सेवा।
भागां वालडे हन ओह जीव सज्जनों
किस्मत विच जिहना दे एह आई सेवा।
देसराज जी चावला लांगरी सन
ओहना लंगर दी खूब निभाई सेवा।
सारे बापू दरबारां ते पोहंच के ते
हिम्मत जोर नाल कर दिखाई सेवा।

ॐ

बैंत

सेवादारां दा लेया इम्तिहान बापू,
नन्दाचौर विच नलका लगावना सी।
ओस नलके दे वास्ते पाइप लम्बा
बुलहो वाल दे विचों लै आवना सी।
सेवादारां नूं बापू जी पूछदे ने,
लेन वास्ते पाइप किस जावना जी
सारे आखदे पाइप है बहुत भारा,
साडे वस दा नहीं लयावना जी।
देसराज जी चावला आखदे ने,
मैनूं देओ साइकिल मैं हाँ जावंदा जी
फिकर करन दी नहीं है लोड़ कोई,
पाइप लैके हुणे मैं आवंदा जी।
चढ़ साइकिल ते ओह बुलहो वाल पहुँचा
पाइप कंधे दे उते टिकावंदा जी,
सीधी सड़क सी साइकिल सवार होके,
नन्दाचौर दे विच आ जावंदा जी।
दूरों वेख के बापू वरदान दिता,
हनुमान साडा पया आवंदा जी।
बड़े खुश होए श्रद्धाराम सतगुरू
महाबीर दा वर ओह पावंदा जी।
पास हो गया ओह इम्तिहान विचों
शुकर बापू दा लख-लख मनावंदा जी।
पास होसी हमदर्द इम्तिहान विचों

जदों इतिहास है एह छप जावंदा जी।

दोहेरा

नमस्कार एहना नूं जो चावला परिवार।
सेवा गुरू दरबार दी कीती श्रद्धा धार।।

दया दे सागर बापू श्रद्धाराम जी

बेंत

सन्तोख राज गुम्बर रहंदा आगरे सी
अचन चेत ही ओसनूं बुखार होया
करदा रहया इलाज कई डाक्टरां दे,
लम्बे अरसे दा ओह बीमार होया।
इक डाक्टर ने देख के कहया ओसनूं
टी.बी. मर्ज तैनूं मेरे यार होया।
मीट, अंडे जे खाएंगा बचेंगा तूं
नहीं तां मौत दा तूं है शिकार होया।
सन्तोख राज चिट्ठी नन्दाचौर पाई
जिस विच रोग दा सारा इजहार होया।
अंडा मीट खाओ डाक्टर कहन मैंनूं
दिल मेरा है बड़ा अवाजार होया।
नाले लिखेया मैं बेशक मर जावां
अंडा मीट ना मैनूं दरकार होया।
चाहे रख लवो चाहे मार देवो,
मैं तां बापू जी तुहाडे आधार होया।
तुहाडी मर्जी ते दारोमदार सारा।
मन मेरा है बड़ा बेकरार होया।

तुहाडी मेहर दी है मैनूं लोड़ बापू।
मेरे वास्ते सूना संसार होया।

बेंत

उत्तर दिता महाराज ने भेज चिट्ठी
मार सकदा नहीं तैनूं काल बेटा
अंडा मीट नहीं खाना तां ना खांवीं
आशीर्वाद साडा तेरे नाल बेटा।
बिना मीट अंडे बच जाएंगा तूं
दिल विच जरा ना करीं मलाल बेटा।
प्रतिज्ञा तेरी ते असीं प्रसन्न होए।
बापू तेरे ते होए दयाल बेटा
किरपा बापू दी नाल ओह ठीक होया
जीवंदा रहया पीछे काफी साल बेटा
मेहर जिस ते बापू दी हो जावे
हो जावंदा ओह मालामाल बेटा।
करो दया दृष्टि सच्चे पातशाह जी,
'हमदर्द' वी तुहाडा है लाल बेटा
लोक सुखी परलोक वी होवे उज्जवल
खुश होवसी तुहाडा एह बाल बेटा।

बख्शशां दे दाते बापू श्रद्धाराम जी

बेंत

इन्द्रपाल मिगलानी बीबी विद्यावन्ती
नहीं सी एहना दे होई सन्तान भाई
गाजियाबाद दे विच निवास करदे

पुतर बिना सी घर सुनसान भाई।
इन्द्रपाल दी माँ हथ जोड़ के ते
कीती अर्ज बापू अगे आन भाई।
सच्चे पातशाह बख्श देयो इक पुतर
इन्द्रपाल दा तां है कल्याण भाई।
बापू देख के दृष्टि नाल आखदे ने।
ऐस दे भाग विच नहीं संतान माई।
बच्चा किसे दा गोल लै लवे अपनी,
रह जावसी ऐसदा निशान माई।

बेंत

माई आखेया जिस तरहां हुक्म तुहाडा
असां मनेया सानू मंजूर है जी
छोटी नूहं मेरी गर्भवती है जी,
ओह ही दे देयो पुतर जरूर है जी।
अगों बापू जी हस के आखदे ने,
कुड़ी होई की साडा कसूर है जी।
माई आखेया कुड़ी नूं फाहे लाणा,
मेहर करो देयो पुतर जरूर जी।
बापू आखेया टाईम जद आवसीगा
होणां सो जो रब नूं मंजूर है जी।
माई आखेया तुसीं जे दया धारो
आस होवसी पूरी जरूर है जी।

बेंत

उडीक विच नौ मास व्यतीत हो गए,
दसवां लगा महीना बतावंदे ने

बीत गया दसवां चढ़ेया ग्यारहवां तां
सोचां सोचदे नाले घबरावंदे ने
सारे कर सलाह ते लिख चिट्ठी
नन्दाचौर महाराज नूं पावंदे ने,
चिट्ठी पढ़ महाराज ने उत्तर दिता,
बापू कन्या तों पुतर बनावंदे ने।

बेंत

पुतर कुड़ी तों बनदे देर लगी
चिन्ता करन दी तोहानू कोई लोड़ नाही
ओम बापू दे भरे भण्डारेयां विच
किसे चीज दी सज्जनों थोड़ नाही
पुतर बख्शेया बापू श्रद्धाराम जी ने
ऐस विच जरा वी तोड़ मरोड़ नाहीं
कर लवो तसल्ली पूछ सलवो जाके
हमदर्द नाल करो अजोड़ नाही।

मातलोक दा कल्पवृक्ष

बेंत

कल्पवृक्ष है लगा स्वर्ग दे विच
इन्द्रदेव ने है लगवाया सज्जनों
ओस पेड़ दी है विशेषता एह
थले ओस दे जो कोई आया सज्जनों
जैसा मन दे विच संकल्प कीता
फल वैसा ही ओस ने पावा सज्जनों
ढक्का साहब विच बापू श्रद्धाराम जी ने कल्पवृक्ष एक ऐसा लगाया सज्जनों

झण्डा साहब लगाया वरदान दिता

कल्पवृक्ष दे तुल बनाया सज्जनों

एस दे थले खलो के संकल्प जैसा

करे वैसा ही फल ओस पाया सज्जनों ।।

बैंत

पर इक शर्त है कामना शुभ होवे।

बुरी कामना पूरी ना होवंदी ए

दुष्ट आत्मा कर दी है कर्म खोटे

सुख फिर वी ना मिले फिर रोंवदी ए

मन्नता मन ऐथे कई जावंदे ने,

पूरी आस सब दी ऐथे होवंदी ए

मन्नता वाले आ झंडे चढ़ावंदे ने,

मन्नत जेस तरह दी जिस दी होवंदी ए।

कुंडली छंद

झण्डे थले जो आन के करदा है अरदास।

बापू श्रद्धाराम जी ओहदी पूरी करदे आस।

पूरी करदे आस मेरे सतगुरू गिरधारी।

हमदर्द दी पूरो आस दास जावे बलिहारी।

छया छंद

पहला झण्डा सतगुरू मेरे ओथे सी लगवाया लंगर खाना जिथे अजकल पक्का है बनवाया लंगर खाने वाली धरती एक भगत ने दिती नाम है ओस दा देवीदित्ता एह नेकी ओस कीती। श्री हंसराज जी नागपाल कूचा पण्डित विच रहंदे। बेटे ओस दे कृष्णलाल नूं वर पुतर दा देंदे। पोता होया हंसराज घर खुशियां खूब मनाईयाँ रिश्तेदार ते होर वी सारे आके देन वधाईयाँ। प्रण कीता श्री हंसराज ने सतगुरू दिल्ली आओ पोते दे चोले दी अपने हथी रस्म कराओ। नामकरण वी आप जी ने ऐस बख्शश दा है करना। संगत नूं आ दर्श दिखाओ सभी आप दी सरना। बापू जी फिर दिल्ली आए चोला आन पवाया इन्द्रजीत सी नाम रखेया मुखों वर सुनाया होवे लम्बी उम्र वाला सतगुरू एह फरमांदे जो मुखों फरमावन

सतगुरू ओह पूरे हो जांदे। ओथों चलके सतगुरू मेरे ढक्का साहब विच आए। लंगरखाने वाली थां ते सतगुरू चरन आ पाए। चलदे फिरदे जद सतगुरू जी मेन रोड ते आए। बापू जी सन अगे अगे पीछे संगत आए। हंसराज दी वड्डी बेटी राजरानी एह कहंदी, बापू जी दी संगत काफी दिल्ली दे विच रहंदी। श्री गुरू हरनाम जी दा एथे स्थान बनाओ संगत दे कल्याण वास्ते तीर्थ नवा बनाओ। अज है जिथे मन्दर बनेया खड़े एस थां आके रामलुभाया भगत जी ने ऐह सुन्दर मौका पाके बापू जी नूं कहया ओस ने एस धरती दे बारे मन्दर ऐथे बन जाए तां संगत दे भाग न्यारे ओसे वेले बापू ने अरदास सी ऐथे कीती जनकी अरदास ना विरथा जावे शास्त्र दी एह नीति।

बापू जी दी आज्ञा दे नाल धरती एह लै लीती एस धरती ते महापुरुषां सी कठिन तपस्या कीती। बापू ने फिर सभा बनाई मिलके कार्य करदे बढ़ चढ़ के सब सेवा करदे सेवक जो एस दर दे रामलुभाया भगत जी ने बापू दी जय बुलाई। मान वडियाई त्याग के ओस ने सेवा बहुत कमाई।रामलाल श्री कृष्ण चन्द जी गाबे दा सी बेटा मन्दर दा सामान लयावे सेवा करे हमेशा खड़ी समस्या दूजी होई मन्दर किवें बनाईए पैसा लग गया धरती ते होर पैसा किथों लयाईए इक प्रेमी ने कहया आए के मन्दर मैं बनवांवा जितना पैसा लगेगा मैं अपने कोलों लावां। सतगुरू जी दे दिल न लगी एह गल मेरे भाई। पैसा लावे संगत होवे सबदी सफल कमाई। इक अठन्नी इक मेंबर दा चन्दा लवो माहवारी। एस सभा दी मैंबर बन जाए जितनी संगत सारी। पैसा लाके संगत दा बापू मन्दर बनवाया। टूजा झण्डा एस मन्दर ते बापू जी लगवाया दिता एह वरदान ते कहन्दे कल्पवृक्ष है लाया सब दीयां आसां पूरीयां होवन जो वी ऐथे आया।

<u>कबित</u>

बापू श्रद्धाराम जी जदों वी जान सेवकां ते

बस ते सवार हो के महतपुर जावंदे

ओथों अगे आदरामान गड्डे उते बैठ केते

सेवकां दे घर जाके चरन अपने पावंदे।

कुछ अर्सा बाद श्री गंगाराम राज देव

साइकिल ते बिठा के है सी बापू नूं लै जावंदे इक वारी बापू जी ने पूछेया कि गंगाराम कारोबार की है तोहाड़ा कितना कमावंदे।

<u>कबित</u>

गंगाराम आखेया है छोटी जई दुकान मेरी आमदनी कोई खास नहीं थोड़ा कारोबार जी नाल इक होर कम्म छोटा जेहा शुरू कीता

वाज वट्टन वाली करदे मुंज दा व्यापार जी

बापू जी ने आखेया दुकान तेरी देखनी है। चलके दिखाओ असी लईये निगाह मार जी

देख के दुकान ते रूपया एक बापू दिता

गंगाराम असी बने तुहाडे हिस्सेदार जी

बापू दा रूपया लै के गल्ले विच पाया।

कारोबार नूं वधाया हो गई मौज बहार जी।

एह ने बापू दियां मेहरां हो गईयां लहरां बहरां बापू होन जे दयाल तां हो जांदा बेड़ा पार जी।

दोहा

ऐसे तरह दी होर इक, जिन्दा है मिसाल । सक्कर सुधा दयालचन्द ते हो गये बापू दयाल।

कबित

बेटा दयाल चन्द दा जोगिन्दर लाल नाम,

छड्डु पढ़न दा ध्यान, ओह सी कालेज न जावंदा मुंडा आखे मन मेरा, पढ़न विच लगदा नही। होर जेहडा कम्म आखो, करके मैं आवंदा।

पुतर नूं नाल लै के बापू दे हजूर विच

दयाल चन्द खड़ा हो के अरज सुनावंदा।

बापू जी एह मुंडा मेरा छड्डु के पढ़ाई बैठा, जतन बहतेरे कीते पढ़न न जावंदा।

कबित

बापू जी ने पूछेया, तूं करना की चाहें बेटा,

मुंडे कहया बापू जी दुकान मैं चलावांगा। लगदा पढ़ाई विच मन मेरा जरा वी नहीं,

बैठ के दुकान ते मैं ड्यूटी बजांवागा।

मन मेरा चाहे अच्छा कारोबार करां कोई, बिजनैस व्योपार विचों पैसे मैं कमावांगा।

बापू जी दे दर दी भरांगा जाके हाजरी मैं,

सारी ही कमाई पिता अगे चा टिकावांगा।

कबित

बापू जी ने आखेया दयालचन्द चाबियां

दुकान दीयां देके ऐस मुंडे नूं बिठाएंगा

नोटां दियां गड्डियां दे, ढेर लग जानगे,

ते गिन गिन नोट लखां आप थक जाएंगा प्रत्यक्ष नूं प्रमाण दी, नही लोड़ मेरे मितरा ओए, देख के नजारा अखां नाल मन जाएंगा।

अरे हमदर्द अमीर जे तें होवना ऐ।

ओट लै के बापू जी दी सेठ बन जाएंगा।

<u>सभा दे मुख्य सदस्यां दे नाम</u>

<u>कबित</u>

पहले प्रधान श्री हंसराज नागपाल,

गोकल चन्द जग्गा बने दूजे प्रधान जी।

एन्हा दे उपरान्त बीबी इन्दरा जी आये,

सेवा बोहत कमाई, ऐह सी तीजे प्रधान जी अज प्रधान श्री कृष्ण लाल नागपाल,

बेटे बीबी इन्दरा ते हंसराज जान जी

सैकटरी सी पहले श्री देसराज नागपाल

सेवा ओहना बोहत कीती मैनूं जो ज्ञान जी निर्मल चन्द छाबड़ा खजांची बनाए बापू

भगत संतलाल बने उप प्रधान जी।

सैकटरी ने अज श्री हर गुलाल नागपाल

बेटे देसराज नागपाल दे कहान जी।

सेवा बेमिसाल कीती निर्मल चन्द छाबड़े ने निरहंकार अते होके निर्माण जी

बीबी राज चावली ते पाहवा जगदीश राज, हंसराज मुटनेजा, सेवा पये कमान जी।

चौधरी अविनाश चन्द्र गुम्बर कहावंदे ने,

ड्यूटी एडीटर दी खूब ए निभाण जी रोज दे प्रसाद दा, जो भोग लगे बापू जी नूं

जग्गा परिवार ऐस ड्यूटी नूं निभाण जी,

जय गोपाल जग्गा दा परिवार सारा करे सेवा हर भगवान बेटा जो स्वामी जी कहान जी

बीबी प्रकाश जात कमरा कहाये

ओह वी सेवा आ कमाए ओस दी हिम्मत महान जी लंगर दी सेवा करे राज तनेजा

राज चावली ते नाले होर कई मेम्बरान जी जोडेयां दे सेवादार खेमचन्द चमनलाल, सेवादारां उत्ते हथ बापू दा महान जी,

सारी संगत करे सेवा बापू सब जाणदे ने।

किदां किदां नाम दसां बापू जानीजान जी,

बापू हमदर्द नूं शक्ति प्रदान करो,

सेवा मैं कमांवां अपनी लाके जिन्द जान जी।

दोहा

हाड़ शुदी एकादशी सावन पहली मास

वी सौ चव्हण विक्रमी सम्वत जानो आप।

दोहा

सतगुर श्रद्धाराम दे अगे कर अरदास,

सतगुर दा लै आसरा, आरम्भ कीता इतिहास।

दोहा

मघर वदी तिथि पंचमी इतिहास दा पहला भाग, पंज महीने चार दिन विच पूरा हो गया आज।

बेंत

मेरे सतगुरां कीती महान कृपा

पहला भाग एह पूरा इतिहास होया,

लिखन बैठदा सां मन डोलदा सी,

कई वार सी चित्त उदास होया।

शक्तिमान मेरे सतगुर देन धीरज,

ओए हमदर्द तू काहनूं निराश होया,

असी दसां गे तैनूं तू लिखदा जा,

तां फिर दास नूं पक्का विश्वास होया।

बेंत

भुल चुक एस विच जो होवे कोई

बखशनहार सतगुर बख्शनहार संगत।

हथ जोड़ के अर्ज हमदर्द करदा,

गुनाहगार मैं हां बख्शनहार संगत।

इच्छा बापू दी होई, जे रही जिन्दगी,

दूजा भाग तां होसी त्यार संगत,

श्रद्धा भावना वालेयां पास बिनती,

जेहड़े प्रेमी ने करन इंतजार संगत।

श्रीमान 1008 बापू श्रद्धाराम जी महाराज

जी का जीवन चरित्र इतिहास

भाग-2

कृतकवि लाल चन्द 'हमदर्द'

मंगला चरण

सतगुरू मेरे दीन दयाल भक्तवत्सल पूर्ण गोपाल, महिमा इनकी अपरम्पार होये अवतरित खातर संसार। श्रीस्वामी जगत स्वामी, पारब्रह्म प्रभु अर्न्तयामी, लाखों जीव कीये भव पार, लाखों का हुआ उद्धार इनका किसी ने अंत न पाया, सर्व रूप सबको दिखलाया। सतगुर मेरे पूर्ण अविनाशी, सतगुर मेरे सदा सुख रासी, जिव्हा एक उस्तत अनेक, नही मुझ में इतना विवेक अचरज खेल अचरज वडियाई, लीला इनकी लिखी नजाई, जो भी आया इनके द्वार, कर दिया उसका बेड़ा पार। इच्छा पूरक सर्व सुख दाता, इसीलिये 'हमदर्द' ध्याता।

त्रिकालदर्शी सतगुर श्रद्धाराम जी

बेंत

श्रद्धाराम जी बापू त्रिकालदर्शी,

तीनों काल दी बापू जी जानदे ने।

जो जो बीती जिस बन्दे दे नाल सज्जनों

रेखा मत्थे दी वेख बखांनदे ने।

हुक्म बापू दा सेवक जो मनदे ने

एस जग अन्दर मौजां मानदे ने।

न्यारे खेल बापू श्रद्धाराम जी दे,

कोई विरले प्रेमी पहचानदे ने।

बेंत

करिश्मे वापू दे वध तों वध देखे,

करिश्मा होर इक करा ब्यान सज्जनों। लीलाधारी जी दी सुनके एह लीला,

हो जाओगे तुसीं हैरान सज्जनों।

पिंड पीपलां वाली दा सी रहन वाला,

नन्दलाल पण्डित जिसदा नाम सज्जनों। नन्दाचौर तों थोड़ी ही दूर सी गा,

होशियारपुर दे पास ग्राम सज्जनों।

भगत वापू दा इक दिन सोचदा ए,

करिये बापू नूं चल के प्रणाम सज्जनों। आशीर्वाद प्राप्त करिये सतगुरां दा,

हो जावसी साडा कल्याण सज्जनों।

बेंत

एधर बापू जी, भगत नूं आखदे ने,

गुरांदित्ता हो जाओ त्यार छेती,

पिंड पीपलां वाली अज जावणा है,

कोई करो सवारी त्यार छेती।

ओघरों भगत ते एघरों भगवान चले,

अपनी अपनी सवारी सवार छेती।

तांगे विच बैठा नन्दलाल पण्डित देखो

रचना की रची करतार छेती।

बेंत

पंज साल दा बालक नन्दलाल जी दा,
कहंदा पापा जी देओ मैंनू एक आना।
औसदे लयाके पकौड़े मैं खावसांगा,
जिथे जाना जे फिर तुसी चले जाना।
पण्डित आख्या बेटा घर चला जा तूं
वापस आवांगा लै लवीं दो आना।
तांगा रोकन लई बालक आ गया अगे,
मुक गया जग तों उसदा अन्न दाना।

<u>बेंत</u>

बालक आ गया तांगे हेठ सज्जनों,
चोटां लगीयां बोहत बेहोश होया।
नन्दलाल ने तांगे तो उतर के ते,
चुक बालक नूं लया ते सोच होया,
घर लै जाके बुला लया डाक्टर नूं,
डाक्टर वेख के नब्ज खामोश होया ।
चन्द घड़ियां दा एह मेहमान बालक,
हालत गंभीर है बड़ा अफसोस होया।

<u>बेंत</u>

डाक्टर घर तो बाहर ही निकलया सी,
उत्तों पोहच बापू श्रद्धाराम जी गये,
चदर विच लपेट के पुत अपना,
नन्दलाल जी अन्दर लिटान गये।
बापू चरणा ते फिर आ टेक मत्या,
बैठक विच लै जाके बिठान गये।
पत्थर रख के छाती ते पति पत्नी,

महाराज नूं करान जलपान गये।

बेंत

थोड़ी देर पिछों होया तैयार भोजन,

कीती बेनती आ नन्दलाल पण्डित।

सच्चे पातशाह भोजन तैयार है जी,

पाओ भोजन तां होसी निहाल पण्डित। जानीजान अंजान बन पुछदे ने,

किथे गया है ओ तेरा बाल पण्डित।

बड़े प्रेम नाल करदा है ओ सेवा,

बापू बख्शाया तैनूं ओ लाल पण्डित।

बेंत

पण्डित आख्या कीते खेल रहया होसी,

बेसमझ है बालक नादान है जी,

जल्दी ल्याओ बुलाके ओ करे सेवा,

पण्डित आखदा बालक अंजान है जी

अर्न्तयामी सर्वशक्तिमान सतगुर,

तीनों काल दा तोहानूं ज्ञान है जी।

भोजन करो जल्दी ठण्डा हो रहया ए,

की दसीये हाल वेरान है जी,

भावी जो वरती पण्डित नाल सज्जनों,

सारा कीता ओस हाल ब्यान है जी।

काल वस है मौत दी गोद सोया,

पण्डित रो-रो होया बेजान है जी।

बेंत

शक्तिमान सतगुर मेरी बेनती ए,

एक वार ओठ के मंग लवे आना।

आने पिछे कर बालक कुरबान दिता,

दुनिया मारेगी सदा ही ए ताना।

एस गल दा दुख न रहवे मैनूं,

आने पिछे खराब हो गया खाना।

सच्चे पातशाह जी करो दया दृष्टि,

होना सो करतार दा जो भाणा।

बेंत

महाराज ने आख्या करो जल्दी,

एक जल दा ल्याओ गिलास पण्डंत।

बापू दीनदयाल ते करो निश्चा,

रखो होसला तोड़ो न आस पण्डंत।

बापू सब दी कामना करन पूरी,

करदे किसे नूं नहीं निराश पण्डंत।

डावांडोल न करो तुसीं मन अपना,

थोड़ा तुसी वी रखो विश्वास पण्डंत।

बेंत

मन्त्र पढ़ के जल दा मार छिट्टा,

बालक तांईं बापू सावधान कीता।

बाल ओठ के मंगेया एक आना,

आना मंग के सब नूं हैरान कीता।

आना मंग के लेट गया फिर बालक,

ऐसी हालत ने सबनूं परेशान कीता।

ममता मां दी है मशहूर जग विच,

चरण बापू दे पकड़ ब्यान कीता।

बेंत

बख्शनहार है तूं बख्श दे पुतर,
करन कारण तूं सारे संसार दा हैं।
लखां पापीयां दे बेड़े पार कीते,
बेड़े डुबदे सबदे तारदा हैं।
तुसीं पूर्ण हो मोये जिवाल देंदे,
तूं तां आप ही रूप करतार दा है।
तेरे दर ते आवे जो आस करके,
कारज सबदे आप सवारदा हैं।
झोली अड्डु के खड़ी हां पास तेरे,
दर आया नूं तू न दुतकारदा हैं।
एक मां तती मंगे खेर तैथों तू तां
सब दी बिगड़ी सवारदा हैं।

<u>बेंत</u>

महाराज जी हस के आखदे ने,
पहले पिता दा हल सवाल कीता।
नम्बर मां दा आया हुन की करिये,
लाजवाब हो गये ऐसा हाल कीता।
ममता माँ दी कीता मजबूर सानूं,
लिखे लेख दा नहीं ख्याल कीता।
घटना घटन वाली बापू, जानदे सन,
चलके आप आये ते कमाल कीता।
मन्त्र पढ़ के दुबारा जल छिड़केया ए,
जिन्दा बापू जी पण्डंत दा बाल कीता। ओमप्रकाश गिरधर कोलों कथा सुनके,
'हमदर्द' ने लिखन दा ख्याल कीता।

<u>बेंत</u>

हानि-लाभ ते जस-अपजस जग विच,

जीवन मृत्यु विधाता दे हथ है जी।

होनी होके रहवे जहान कहंदा,

ए किसे दे कुझ न वस जी।

महापुरषां दा आ के भरे पानी,

होनी संतां दे अगे बेबस है जी।

लीला बापू दी है बेअंत सज्जनों,

श्रद्धाराम दी कथनी अकथ है जी।

मारन रेख विच मेख महापुरुष सज्जनों

बधे रब्ब दे संत छुड़ा देंदे।

लिखे लेख विधाता दे मेट के ते,

ओत्थे अपनी कलम चला देंदे।

बख्शां दे दाते बापू श्रद्धाराम जी

बेंत

पिंड कलां होलम्बी दे रहन वाला,

जय लाल सैनी दुध वेचदा ए।

सेवक प्यारा है बापू श्रद्धाराम जी दा,

अपनी लिखी तकदीर नूं वेखदा ए।

धियां सत होईयां पुत इक वी नहीं,

रेखा कर्मा दी कोई न मेटदा ए।

पूर्ण संता दे हथ ए ताकतां ने,

बदल देन खाता लिखे लेख दा ए।

इक वारी महाराज जी आये दिल्ली,

जय लाल आके मत्था टेकदा ए।

महाराज ने डिठा उदास चेहरा,

पढ़या मस्तक ते लिखेया जो लेख दा ए।

बेंत

डिग चरणा ते भगत जयलाल कहंदा,

रोए रोए के चरणा नूं धोवंदा ए।

बख्शश करो मेरे सच्चे पातशाह जी,

जो करोगे आप सो होवंदा ए।

धियां धन पराया सब जानदे ने,

वंश पुत्रां बाझ न सोहवंदा ए।

'हमदर्द' ए गल मशहूर जग विच,

पुत्र पिता दी थां खलोवंदा ए।

बेंत

महाराज ने आख्या घर अपने,

हवन यज्ञ पुत्रेष्टि कराओ बेटा,

बापू करेगा तेरी मुराद पूरी,

विद्वान कोई पण्डित बुलाओ बेटा।

हवन यज्ञ संपूर्ण करा के ते,

भोजन सात्विक ओसनू खिलाओ बेटा।

दे के दक्षिणा ओसनूं प्रसन्न करना,

आशिर्वाद ओसदे कोलों पाओ बेटा।

बेंत

जयलाल कहंदा महाराज मेरे,

तोहाड़े जेहा न जग ते होर कोई।

तोहाड़े भरे भण्डारा विच कमी कादी,

किसे चीज दी ओथे न थोड़ कोई।

सब शक्तियाँ दे मालक आप स्वामी,

तुसीं करो जो करे न होर कोई।

करो मेहर ते करो एह आप सब कुछ

किसे दूसरे दी नहीं लोड़ कोई।

बेंत

हवन यज्ञ महाराज आरम्भ कीता,

इकट्ठा जदों ओ सारा सामान होया।

हवन करदेंया करदेंया जोत बुझी,

जयलाल एह वेख हैरान होया।

मन विच सोचदा किस्मत नूं कोसदा ए,

बेचैन डाढा परेशान होया।

की बनेगा साड्डी तकदीर दा जी,

खेल कैसा ए मेरे भगवान होया।

जोत बुझ गई साड्डे नसीब वाली,

पुत्र बाझ ए घर सुनसान होया।

'हमदर्द' कहंदा करिश्मा वेख भगता,

तेरे धीरज दा है इम्तिहान होया।

दोहरा

करो रुकावट दूर प्रभ अपनी कृपा धार।

बुद्धि निर्मल कीजिये होवे बाकी कथा तैयार।।

वाक् कविशर

बेंत

पुत्र बाझ न चलदा वंश जग विच,

पुत्र बिना सदगति कोई पावंदा न।

पुत्र बिना जे होवे कल्याण सज्जनों,

संतां साधा दे द्वार कोई जावंदा न।

पुत्र वास्ते राजा महाराज दशरथ,

शरिंगी ऋषि तों हवन करावंदा न।

पुत्र बिना प्राणी नरकां विच सड़दे,

बिना पुत्रां कोई शोभा पावंदा न।

राजे सगर दे पुत्र सौ भस्म हो गये,

पोत्रा ओन्हा दा जेकर बचावंदा न।

श्राप कारन सड़दे रहंदे नरक अन्दर,

भागीरथ जे गंगा लयांवदा न।

संता साधां नू लोड़ नही पुत्रां दी,

गृहस्थी पुत्र बिना मुक्ति पावंदा न।

कुला सात तारे जे होवे एक भगत पुत्र,

कुपुत्र सौ 'हमदर्द' कम्म आवंदा न।

बेंत

धूर्तराष्ट्र दे होये सौ पुत्र,

वंश अपना कर बर्बाद गये,

पंजां पाण्डवां खटेया यश जग विच,

कुल अपनी कर आबाद गये।

वाक् कविशर

बेंत

मुल विकदे जेकरां मिलन पुत्र,

पुत्रहीन सब लेन खरीद सज्जनों।

कई वंश समाप्त न होन जग विच,

पुत्र बिना न करे कोई दीद सज्जनों।

सिक पुत्र दी होवे न दुश्मनां नूं,

पुत्र जिगर दे टुकड़े अजीज सज्जनों।

मोये पितरां नूं पुत्र देन पानी,

पुत्र जे ही न जग विच कोई चीज सज्जनों।

बेंत

जानी जान सतगुरां ने जान लिता,

साड्डे सेवक दा मन डावां डोल है जी।

सागर गंमां दे विच गोते खा रहया ए,

मुहों कुझ न सकदा बोल है जी।

हथ फेरेया जोत सतगुरां ने,

लटा लट जागी जोत ते कोल है जी।

जयलाल ए वेख के दंग होया,

मेहर बापू दी बड़ी अनमोल है जी।

बेंत

कीता यज्ञ संपूर्ण महाराज जी ने,

आशिर्वाद लीती जयलाल है जी

पुत्र हीरेयां वरगे बापू तीन बख्शे,

लीला बापू दी बेमिसाल है जी।

मिठा मेवा है पुत्र संसार अन्दर

पूर्ण संत बख्शन सोहने लाल जी।

ऐसी वस्तु प्राप्त ओ जीव करदे, जिसदी

प्रीत 'हमदर्द' बापू नाल है जी।

भ्रम दूर करन वाले बापू श्रद्धाराम जी

बेंत

बीबी चंचल जी शंकर लाल सेठी,

विच शहर लुधियाने निवास करदे,

श्रद्धराम जी बापू नू रूप ईश्वर,

दिलो समझदे पक्का विश्वास करदे।

जदों कोई समस्या पेश आवे,

बापू चरणा दे विच अरदास करदे।

सच्चे पातशाह बापू श्रद्धाराम मेरे,

झटपट सबदी पूरी आस करदे।

बेंत

जदों औन लुधियाने महाराज मेरे,

बीबी चंचल दे घर विश्राम करदे।

कमरा एक अलग महाराज दे लई,

रखया होया सी जिस विच आराम करदे।

भगत बापू दा सेठी परिवार सारा,

पूजा आरती सी सुबह शाम करदे।

पहले भोग लवा महाराज जी नूं,

फेर सारा परिवार जलपान करदे।

बेंत

एक दिन दा वाक्या सुनो सज्जनों,

बीबी चंचल ने दुध उबालया ए,

उबले दुध दे विच मिट्ठा पा दिता,

गरम दुध दा भोग लगवा लया ए।

अगले दिन सी एन्हा नन्दाचौर जाना,

दर्शन जाके बापू दा पा लया ए।

सच्चे पातशाह बापू श्रद्धाराम मेरे,
मुँह खोल के अपना दिखालया ए।
मुख विच देख छाले चंचल कंभ गई,
बापू आखदे एस तरह चाही दा नहीं।
गरम दुध एड्डा एड्डा गरम भोजन,
कदी भुल के वी भोग लगवाई दा नहीं।

बेंत

निर्वाण पद प्राप्त कीता सतगुरां ने,
संगत रो-रो के मंदे हाल होई।
अचनचेत शरीर त्याग दीता,
नहीं सी किसे नूं ख्वाबों ख्याल कोई,
दर आया नूं नहीं सी निराश करदे,
संगत बापू दी सारी निहाल होई।
अपने सुखां नूं रोवंदा जग सारा,
सारी संगत सी ऐत्थों मालामाल होई।

बेंत

बीवी चंचल श्री शंकर लाल सेठी,
गुण बापू दे सदा ही गांवदे ने।
हर साल बापू श्रद्धाराम जी दे,
कई वारी दर्शन करन जावंदे ने।
ज्योति ज्योत समाये महाराज
जिस दिन पति पत्नी उदास हो जावंदे ने।
मन विच सोचदे नन्दाचौर की जाना,
हुन तां बापू जी नजर न आवंदे ने।

बेंत

लीला देखो बापू श्रद्धाराम जी दी,

राती नींदर विच सुता संसार होया।

बीबी चंचल नूं सपने दे विच आके,

सच्चे पातशाह जी दा दीदार होया।

सपने विच ही उठी घबरा के ते,

सिर चरणा ते रख निसार होया।

कहंदी दित्ते अचानक अज किवें दर्शन, टेलीफोन ते न कोई तार होया।

कीती बड़ी कृपा मेरे सतगुरू जी,

मेरा दिल सी बड़ा अवाजार होया।

कमरा बापू जी दा झट खोल दीता,

पलंग पहले सी विश्या तैयार होया।

पलंग उत्ते विराजे महाराज मेरे,

बीबी चंचल दे मन विच विचार होया।

समय है सी दोपहर दा कहे चंचल,

महाराज जी भोजन तैयार होया।

महाराज कहंदे भोजन ल्याओ, जल्दी,

कीता मुख ने सानू लाचार होया,

चंचल भोजन ल्याके की वेखदी ऐ,

खेल होर दा होर सरकार होया।

श्रद्धाराम दी जगह गुरदास राम बैठे,

एकदम ठठकी की खेल करतार होया।

अखां मल के गौर नाल वेखदी ए,

श्रद्धाराम जी दा फेर दीदार होया।

अगों बापू जी बोल के आखदे ने,

तोहाड़ा वेखेया बदलेया विचार होया,

तोहाड़े वास्ते आवणा पया सानूं,

ओह वी साडा है रूप इजहार होया।

गुरदास राम ते मेरे विच भेद कोई ना,

तोहाड़ा मन क्यों बेकरार होया।

इको जोत ते इको है रूप साड्डा,

निश्चा वालेया दा बेड़ा पार होया।

अख खुल गई सपना टुट गया,

सपने विच एह सारा चमत्कार होया।

रो-रो के जगावंदी पति तांई सारा

सुपने दा हाल इजहार होया।

अगले दिन ही होके तैयार दोवें,

पति-पत्नी नंदाचौर जावंदे ने।

मत्था टेकेया जाके दरबार अन्दर

यथाशक्ति जा भेंट चढ़ावंदे ने।

दर्शन करके बापू गुरदास राम जी दा,

भुलां अपनीयां सब बख्शावावंदे ने।

'हमदर्द' वी भुलां बख्शवाये बापू,

तोहाड़े दर आये बख्शे जावंदे ने।

<u>कोरड़ा छन्द</u>

जो लिखेया नसीब विच ओहो मिलदा,

हुक्म रब्ब दे बगैर पत्ता वी न हिलदा। कर्मानुसार बनदा नसीब है,

(1)कोई है अमीर ते कोई गरीब है।

किसनूं सुनावे कोई हाल दिलदा,

हुक्म तों बगैर .....

(2)रेख विच मेख संत हैन मारदे,

डुबदेयां पत्थरां नूं संत तारदे।

होन जे दयाल संत फल मिलदा,

हुक्म तों बगैर...

(3)रब्ब दे जो बधे संत ने छुड़ावंदे,

संतां दे बधे न खलासी पावंदे।

संत करन मेहर तां कंवल दिल दा,

कहे 'हमदर्द' झटपट खिलदा,

लिखेया नसीब विच ओहो मिलदा,

हुक्म तों बगैर...

<u>बेंत</u>

त्याग मूर्त्ति बापू श्रद्धाराम मेरे,

सेवा सदा निष्काम कमावंदे सी,

भोजन डेरे दा तां ओन्हां की खाना,

चुटकी नमक दी वी ओ न खावंदे सी।

ऐहना दे त्याग दे की की प्रमाण देवां,

पानी पीन लई बाहरों मंगावंदे सी।

माया चढ़े चढ़ावा दरबार ते जो,

ओसनूं हथ वी कदे न लावंदे सी।

सुरमा पीसदे सी हथां नाल सज्जनों,

सुरमा बेनजीर बवांवदे सी।

सुरमा वेच के करन गुजरान अपनी,

रोटी कपड़े दा खर्चा चलावंदे सी।

<u>बेंत</u>

इक वारी दा वाक्या सुनो सज्जनों,

डेमूं सतगुरां नूं इक कट गया,
सेवादार ओस वक्त सी पास जेहडा,
लंगरखाने विच ओह झटपट गया,
चुटकी नमक दी लंगर चों ले आया,
ओथे मली जिथे डेमूं कट गया।
पूछेया बापू ने नमक ल्याया किथों,
सेवादार डर के चुप वट गया।

बेंत

पूछेया फिर प्यार दे नाल बापू,
बेटा नमक एह कित्थों ल्याया हैं,
किस वास्ते डर के चुप होया,
किस वास्ते तूं घबराया हैं,
सेवादार ने कहया महाराज मेरे,
लंगर खाने चों नमक ल्याया मैं।
डेमूं कटे ते मलिए नहीं सोज चढ़ दी,
दर्द बंद होवे तां लगाया मैं ।।

वाक् बापू श्रद्धाराम जी

बेंत

श्रद्धाराम जी आखदे गल साड्डी
जरा सुन लवो लाके ध्यान बेटा।
फिरदा विच अन्धकार संसार सारा,
नहीं किसे नूं इतना ज्ञान बेटा।
जिस दा नमक खाईये ओसदे गीत गाईये,
नमक खाके न करिये हराम बेटा।

ऐ लै पैसे पा बापू दी गोलक दे विच,

तां ही आवेगा सानूं आराम बेटा।

दारू मुफ्त दा थोड़ा ही करे फायदा,

एह गल मशहूर जहान बेटा।

भेद वालियां होंदियां कई गलां,

'हमदर्द' न समझे नादान बेटा।

बेंत

एक होर मिसाल कमाल दी ए,

सुनना एसनूं लाके ध्यान सज्जनों,

एह मिसाल वी बेमिसाल है जी,

हो जाओगे सुन के हैरान सज्जनों।

बीबी चिन्ती नूं संगत काफी जानदी ए,

वीर ओसदा गौरी शंकर नाम सज्जनों।

चिंता विच सी सदा उदास रहंदा,

घर नहीं सी पुतर संतान सज्जनों।

उसने मन ही मन विच मनत मन्नी,

पुतर देन बापू दयावान सज्जनों।

सुन्दर कार इक बापू नूं भेंट करसां,

वापू करन सवारी नाल शान सज्जनों। जानीजान सबदे दिल दी जानदे ने,

सानूं जरा वी नहीं ज्ञान सज्जनों।

भोले शंकर दा ए ने अवतार सज्जनों

छेती हो जांदे मेहरबान सज्जनों।

वाक् कविशर

बेंत

लखां पापीयां दे बेड़े तार दिते, बेड़ी

कदे वी किसे दी रोहड़ढे नहीं,
दर आयां दी रखदे लाज सतगुर,
बांह पकड़ के किसे दी छोड़दे नहीं।
इच्छा वालेयां दी इच्छा करन पूरी,
दिल कदे वी किसे दा तोड़दे नहीं।
श्रद्धावानां नूं नही निराश करदे,
खाली दर तों किसे नूं मोड़दे नहीं।l

<u>बेंत</u>

पुत्र बख्शया बापू श्रद्धाराम जी ने,
गौरीशंकर दे घर मंगलाचार होया।
लोग लग पये देन वधाई आके फुलेया
खुशी विच सारा परिवार होया।
मन्नी होई जो मनत सी याद आई,
गौरी शंकर दे मन विच विचार होया।
कार ल्याके बापू नूं भेंट करिये,
ल्यावन वास्ते कार तैयार होया ।

<u>बेंत</u>

ख्याल आया सतगुरां नूं पूछ लईये,
किस रंग दी कार ल्याविये जी।
मत्था टेकीये बापू दे चरणां दे विच,
कार छेती तों छेती पहोंचाविये जी।
नाले देईये वधाई जा सतगुरां नूं,
खुशखबरी एह जाके सुनाविये जी।
धनवाद करिये श्रद्धाराम जी दा,
वारे वारे ओन्हा उत्तो जाविये जी।

बेंत

नन्दाचौर विच पहुंच के गौरी शंकर,
वापू चरणां विच शीश निवांवदा ए।
लख-लख देवे वधाईयां सतगुरां नूं,
खुशी विच न फूला समावंदा ए।
हथ जोड़ के बापू नूं अरज करदा,
मनी होई जो मन्नत बतावंदा ए।
तुहाडे वास्ते ल्यावनी कार बापू,
रंग दसो जेहडा मन भावंदा ए।

सवाल-जवाब : बापू श्रद्धाराम-गौरी शंकर

वाक् बापू श्रद्धाराम जी

बेंत

अंगों बापू जी आखेया गौरी शंकर,
केडे चक्करां विच सानूं फसावंदा ए।
कार चलोन दी सानूं नहीं जाच औंदी,
क्यों रफ्फड़ साड्डे गल पावंदा ए।
हाथी बुए ते साड्डे क्यों बनंदा ए,
खर्चा पैट्रोल दा मुफ्त दा पावंदा ए।
कार चलावन लई रखना पवे ड्राइवर,
तनख्वाह ओस दी वी सिर पावंदा ए।

वाक् गौरी शंकर

बेंत

गौरी शंकर ने कहया महाराज मेरे,

कार नाल इक ड्राइवर वी देवांगा मैं।

खर्चा पैट्रोल दा वी सदा मेरे जिम्मे,

तनख्वाह ड्राइवर दी वी आप देवांगा मैं।

टुट भज मुरम्मत दा सारा खर्चा,

ओवी मेरे जिम्मे सब देवांगा मैं।

हुन तां मन जाओ करो हां छेती,

एहसानमंद तुहाडा सदा होवांगा मैं।

बख्शश तोहाडी सब कुछ तुसां बख्शाया ए,

इस विच रत्ती वी मेरी वडियाई कोई नहीं। तोहाडे बख्शे खजाने चों कार, ल्यावां,

इस विच तां मेरी बड़ाई कोई नहीं।

<u>वाक् बापू श्रद्धाराम जी</u>

<u>बेंत</u>

इक होर सवाल उठाया बापू,

मंगन वास्ते कार कोई आवसीगा,

हां नादा कौन जवाब देसी,

पिच्छा साड्डा फेर कौन छुड़ावसीगा।

गौरी शंकर ने कहया एह हथ तोहाड़े,

हां नादा तुसां जवाब देना।

बाकी जो वी खर्चा आ जावसीगा,

ओसदा मैं सारा हिसाब देना।

फेर बापू ने कहया सुन गौरी शंकर

मनोकामना ज्यादा वधाई दियां नहीं,

बन्धन विच पावे ज्यादा लोभ लालच

संतां लई एह कम भलाई दा नहीं।

इक कार तां पहलां है पास साड्डे,

कारां दो-दो असां नूं चाहीदीयां नहीं।

ऐसी कार दी नहीं है लोड़ सानूं

ऐवें गल विच मुसीबतां पाई दीया नहीं।

ऐसी बख्शी है बापू ने कार सानूं

ओस कार ते असां सवार होना।

ओस कार नू लवे कमा जेहड़ा,

ओसने भव समुन्द्रों पार होना।

मानव जन्म मिलेया जिस कार खातर,

ओस कार नूं असी भुला बैठे।

लाहा खट्टने आये 'हमदर्द' जग विच ए

पर मूल वी हथों गवां बैठे।

<u>दोहा :</u>

एक समय दा वाक्या, सुनना मन चित लाए, मास्टर सुरिन्दर पाल जी बैठे मन्दिर आए, पास ऐना दे बैह गया, दीवान चन्द नागपाल, मास्टर जी नूं आखदा, तोहाडे बापू दा की हाल।

<u>चौपाई :</u>

बापू श्रद्धाराम कीती कितनी है भगती,

किथों तक पोहचे ने ते किनीं कू है शक्ति। सुरिन्दर पाल आख्या बेअन्त ओहदी माया। शक्तियां ओन्हां दीयां दा भेद नही पाया।

ऐस वारी तोहाड़े नाल यज्ञ ते मैं जावांगा।

पर्चा इम्तिहान दा ओन्हा दे अगे पावांगा।

परीक्षा लवांगा तोहाड़े बापू श्रद्धाराम दी,

मैं दीवानचन्द हां ते दुनिया मैंनू जानदी,

अठ दिन बाद बस नन्दाचौर जावना,

संगतां दीदार जाके बापू जी दा पावना।

हो जाओ ग्यार तुसीं चलो साड्डे नाल जी,

चलके ते देख लो अखां नाल हाल जी।

आया दिन यज्ञ दा ते हो गये तैयार जी,

संगत इकट्ठी होई करे इंतजार जी।

आपस विच कहंदे बस किस वेले आवेगी,

किस वेले आवेगी ते किस वेले जावेगी।

दोहा:

नौ वजे बस आ गई संगत होई सवार, दीवानचन्द जी आ गये होके घरों तैयार।

बस विच बैठे जाये के सुरिन्दर पाल दे नाल। नन्दाचौर गुरूधाम विच, पहुंचे प्रातःकाल।

चौपाई :

संगत निवास विच रख के सामान जी,

चली गई संगत दर्शन बापू जी दा पान जी। मास्टर ने दीवान चन्द जी नूं लेया नाल जी,

आ गये दरबार करके दर्शना दा ख्याल जी।

चढ़ गये चबारे उते एवी दोवें जाये के,

टेकेया जा मत्था दोहवां सिर नूं निवाए के, पलंग ते बिराज रहे बापू श्रद्धाराम जी,

तेज प्रताप वाले मुक्ति दे धाम जी,

संगत सी बहुत बैठी चरणा दे पास जी, आशीर्वाद पान आई करके ते आस जी।

संगत दे पिछे जाके एवी दोहवें बै गये।

चली गई संगत ए दोहवें कल्ले रह गये।

दोहा :

संगत सारी आशीर्वाद बापू जी दा पाए,

थले आ दरबार विच बैठे सारे आए।

मास्टर अते दीवानचन्द दोहवें बापू कोल,

बापू जी ने आखेया मास्टर तूं कुझ बोल।

चौपाई :

कैसी है तबीयत ते कैसा हालचाल है,

कौन-कौन आये हो ए कौन तेरे नाल है।

जानी जान बापू ने पहले ही लया जान है,

भला लोक साड्डा लैन आया इम्तिहान है।

कौन है तूं भगता ते की तेरा नाऊं है।

कित्थे दा तू रहन वाला केहड़ा तेरा गांव है। किस तरह आये ते किस तैनूं घलया,

तेज श्रद्धाराम जी दा गया नही झलेया।

कि कोई कम्म है ते कैसा समाचार है।

बोल के तां दस मन विच की विचार है।

हो गई जबान बंद बोलेया न जावंदा।

हाल अपने दिल वाला खोलेया न जावंदा। मास्टर जी कहया देवो भगत जी जवाब जी, आये हो लगा लो हुन अपना हिसाब जी।

मार के ते कुहनी मुंह कन नाल लाये के

खुसर फुसर करे मास्टर नूं समाझाए के

हिम्मत नहीं पैंदी किवें सिर उतां चावां,

डर लगदा है किवें नैन मिलावां।

देख तप तेज गई गर्दन है झुक जी,

बोलना कि मेरे तां पसीने गये छुट जी।

दोहा :

मास्टर जी नूं आखदा, तुसी ही देवो जवाब,

लेने दे देने पै गये उल्टा होया हिसाब ।

छेती थल्ले उतरिये दिल मेरा घबराए।

रब्ब रूप नहीं जानेया, कित्ये फंस गये आए।

चौपाई :

मास्टर जी ने कहया मेरे सतगुर श्रद्धाराम जी जात नागपाल है दीवानचंद नाम जी।

भगत कश्मीर दे ताया जी लओ पछान जी, आशीर्वाद देवो हो जावे कल्याण जी।

दोहा :

मास्टर सुरिन्दर पाल ने ए कथा सुनाई आप, जिवें सुनी त्यों ही लिखी, जरा न झुठ मिलाप। कथा संपूर्ण हो गई बापू दी कृपा नाल, भुल चुक अखर जो होवे करना नहीं ख्याल। बख्शनहारे सतगुरू संगत बख्शे नाल, दया दृष्टि 'हमदर्द' ते सदा रखना दीनदयाल।

तीन मूर्त्ति सेवादार

बेंत

जोगिन्द्र पाल मिगलानी, शिवनाथ कक्कड़, खरैती लाल गिरधर सेवादार सज्जनों।

सेवा तीनां दी बेमिसाल देखी,

सेवक देखे कई विच संसार सज्जनों।

दिन रात हन सेवा विच खड़े रहंदे।

करदे नींद नाल नहीं प्यार सज्जनों।

जदों शरण सतगुरां दी विच आवन।

भुल जावंदे अपना परिवार सज्जनों।

बेंत

शिवनाथ कक्कड़ दस्सी हड बीती,

जीवन बन्दे दा हरख ते सोग दा ए,
कदे सुखी ते कदे है दुखी होंदा,
पता लगदा नहीं औदे रोगदा ए।
दाने निकले सारे सरीर उते,
मिलदा लिखेया धुर संजोग दा ए।
दुख सुख सरीर दा भोग होंदा,
प्रारब्ध अनुसार जीव भोगदा ए।

बेंत

कीते बड़े ईलाज न ठीक होया।
सोचां सोचदा ते परेशान होया।
बीबी राजरानी नाले मेल होया।
कक्कड़ साहब दे सुख दा सामान होया।
आये होये ने दिल्ली श्रद्धाराम बापू,
जदों एहना नूं एह ज्ञान होया,
बीवी नाल लैके बापू पास आई,
कीती अरज बापू मेहरबान होया।
सात धागे दित्ते गल पावने नूं।
दिन पन्द्रहवें धागा बदलान होया।
श्रद्धाराम बापू जी दी होई कृपा,
कक्कड़ साहब दा तां कल्याण होया।
तन्दुरुस्त होया, हष्ट पुष्ट होया,
सेवा बापू दी विच खड़ा आन होया।
सेवादार त्रिमूर्त्ति 'हमदर्द' लिखे,
एहना तीनां दा आदर ते मान होया।

सब ताकतां दे मालिक सतगुर श्रद्धाराम जी

बेंत

सेवक बापू दे चौधरी अविनाश चन्द्र,
पुलिस विच सी बापू लगाई सर्विस,
अपनी डयूटी दे विच, पाबन्द रह के,
जी जान नाल एहना निभाई सर्विस
विच पुलस दे रहके न लई रिश्वत,
ऐसी उच्ची ते सुच्ची कमाई सर्विस,
बड़े-बड़े एहना केस हल कीते,
खतरनाक सी कर दिखाई सर्विस।

बेंत

गुंडे-महाबदमाशां नाल लैन टक्कर,
चलन गोलियां नहीं परवाह कीती।
लैके आसरा बापू दा चलदे रहे,
रखख तली ते जान दुआ कीती।
सच्चे पातशाह तुहाडा ही आसरा ए,
बापू चरणां दे विच इलतजा कीती,
ऐक्सीडेंट होए चोटां कई आईयां,
बापू अंग संग होके शफा कीती।

बेंत

रुकमण देवी माता एक वार सज्जनों,
बापू चरणां विच अरज गुजारदी ए।
ऐसदी रक्षा वी तुसां है आप करनी,

बख्शश तुहाडी एह सच्ची सरकार दी ए।

खतरे विच हर वक्त है जान एसदी,

दुख मां न जरा सहारदी ए,

मैं तां कहनी हां छड्डु ऐस नौकरी नूं,

किस्मत मिलेगी लिखी करतार दी ए।

<u>बेंत</u>

बापू आख्या तुसीं न करो चिंता,

जिम्मे साड्डे है तुसां लगा दिता,

दोवें फेर के हथ सरीर उत्ते,

असां कवच फोलादी पहना दिता।

उच्ची कुर्सी ते बैठना है ऐसने,

एह वरदान एस नूं असां चा दिता,

है पक्का श्रद्धालु एह बापू जी दा,

सेवादार है पक्का बना दिता, सेवा करनी दरबार दी बोहत इसने

सारी संगत नूं असां बता दित्ता,

तती वा न लगसी कदे एसनूं,

आशीर्वाद एसनूं असां चा दिता।

कई बार गुरबाणी दा एह दोहा,

सच्चे पातशाह सानू सुना दित्ता,

<u>दोहा :</u>

सुरा सो पहचानिये जो लड़े दीन के हेत,

पुर्जा-पुर्जा कट मरे कबहुं न छोड़े खेत । निष्ठावान है बापू दरबार दा एह,

सेवा विच बापू एसनूं ला दित्ता।

तन मन ते धन नाल करे सेवा,
'हमदर्द' कोलों है असां लिखवा दित्ता।

बेंत

सम्वत् विक्रमी वी सौ दो है सी,
ग्यारह अस्सू महीना लो जान सज्जनों।
शरीर त्यागेया गुरू हरनाम जी ने,
पाया ओहना ने पद निर्वाण सज्जनों।
भार संगत दा ऐहना नूं सौंप दित्ता,
हर तरह नाल जान महान सज्जनों।
श्रद्धाराम जी ने भार चुक लिता,
सारी संगत दा कीता कल्याण सज्जनों।

बेंत

उनत्ती साल कीती सेवा संगतां दी,
रहके गदी नशीन दरबार अन्दर।
रोशन नाम कीता अपने सतगुरां दा,
ऐसा जादू सी ऐहना दे प्यार अन्दर।
कीती घोर तपम्या विच कलजुग,
ऐसा संत नहीं डीठा संसार अन्दर,
माता पिता दा नाम चमकाया ऐसा,
खिड़ेया फुल ज्यों बागे बहार अन्दर।

बेंत

अपने गुरू महाराज दी याद अन्दर,
सुन्दर मन्दिर इक एहना बनवाया सज्जनों, दिल्ली राजधानी भारत देश दी जो,

झण्डा ओम दा ऐथे लगाया सज्जनों।

एह वरदान दित्ता ते एलान कीता,

श्रद्धा धार जेहड़ा एथे आया सज्जनों, शुभकामना ओस दीयां होन पूरण,

श्रद्धाराम ने वर एह सुनाया सज्जनों।

<u>बेंत</u>

सम्वत् विक्रमी वी सौ इक्कती दे विच,

उन्नी मघर नूं पद निर्वाण पाया।

गद्दी सौंपी बापू गुरदास राम जी नूं,

संगत कीती सी ओहना दे जेरसाया।

नक्शे कदम ते चले श्रद्धाराम जी दे,

गुरदास राम जी दा संगत प्यार पाया।

संगत समझेया बदल के रूप अपना,

दूजे चोले विच बापू श्रद्धाराम आया।

छे साल तीन मास गुरयाई कीती।

सम्वत् विक्रमी वी सौ अठत्तीं आया

महीना चैत दी तीन तरीख है सी,

शाम चार बजे परमपद पाया।

ॐ

<u>दोहा :</u>

मिशन अधूरा रह गया खाली होया स्थान, गुरगद्दी सौंपी नहीं संगत होई परेशान।

बेंत

आसन बापू दा रहया सवा साल खाली, महापुरुष कोई आनके पाए फेरा,

युगपुरुष होवे तप तेज वाला,

सारी संगत दा भार उठाए जेहड़ा।

संगत बापू दी चिंता दे विच डुबी,

तारनहार करतार मिलाए केहड़ा।

होई प्रेरणा बापू श्रद्धाराम जी दी,

भानूदत्त जी नूं दित्ता सौंप बेड़ा।

बेंत

ऐस बेडे दे बने मल्लाह बापू,

दर आईयां संगतां रहे तारदे सब,

लक्षण होंदे ने एह महात्मा विच,

नरमी सख्ती ने आप सहारदे सव,

सच्चा रिश्ता है गुरू ते शिष्य वाला,

रिश्ते नाते ने झूठे संसार दे सब।

अपने मतलब लई करदे प्यार सारे,

बिना मतलब दे दूरों धुरकार दे सब,

बांह पकड़ी दी रखदे लाज सतगुर,

सतगुर भुल्लन न, होर विसारदे सब।

अचनचेत विछोड़ा न सहया जांदा।

एह की वरत गये खेल करतार दे सब।

बेंत

संगत रोवंदी पई कुरलाबंदी ए,

क्यों छड गये सानूं दातार सतगुर।

साड्डे कोलों की हो अपराध गया,

तोड़ गये क्यों संगत नाल प्यार सतगुर बख्शनहार हो, आप भुल्लां बख्श दे हो,

सानूं बख्श देंदे सच्ची सरकार सतगुर,

तुसीं दीना ते दया सी करनवाले,

पापी असी संसारी गुनाहगार सतगुर।

<u>बेंत</u>

बापू भानूदत्त जी, तुसीं गये कीत्थे,

तार तोड़ी क्यों संगत नाल प्यार दी ए।

पांदे रहे बुझारतां संगतां नूं,

रमज बुझी न किसे दातार दी ए।

आयु असीं अपनी कर लई पूरी,

होन झुंगे दा जीवन अस्सी जी रहे हां।

दर्शन मेले हो रहे ने संगतां दे,

अमृत बापू दे नाम दा पी रहे हां।

<u>बेंत</u>

कईयां प्रेमीयां नूं ऐ वी आख्या सी,

साड्डे पीछों किसदा नंबर लावना जे।

जिंदे जी साडे नाम रखया जाये,

ऐस गद्दी ते किसनूं बिठावना जे।

<u>बेंत</u>

जिला मेरठ रामराज दे रहन वाली,

इक बीबी नूं एह फरमांवदे ने।

सुन बीबी साड्डा चक्कर आखरी ए,

दो दिन पहलां कहके जावंदे ने।

कष्ट संगतां दे अपने सीस लैके,

सारा बोझ सिर अपने उठावंदे ने।

जानीजान तां सब कुछ ही जानदे सी,

ऐक्सीडेंट बहाना बनावंदे ने।

<u>बेंत</u>

साड्डे पापां दा तुसां भुगतान कीता,

बेड़ा संगत दा छड मझधार गये।

ऐस बेड़े दा कौन 'हमदर्द' होसी,

जिम्मेदारी किसनूं सौंप भार गये।

<u>दोहा :</u>

सौलह साल नौ मास तक भानूदत्त महाराज, गुरगद्दी ते बैठके कीते सबदे काज। वी सौ पचपन विक्रमी सम्वत करां बखान, सौलह फगन प्रातःकाल पाया पद निर्वाण।

<u>दोहा :</u>

श्रद्धा नाल प्रेम एह जो पढ़े सुने इतिहास, 'हमदर्द' कहे विश्वास से सुरपुर पावे वास।

ॐ

भजन 1

मानुष जन्म में भी, जीवन जो संवारा न गया, मौका मिला है अब भी सोचा और विचारा न गया।

मानुष जन्म....

(1) काट कर चौरासी के बन्धन जो ये सारे बन्दा, सच खण्ड हरि की शरण में जो बेचारा न गया।मानुष जन्म....

(2) फिर तो रो-रो के ही पछताएंगे आखिर उस दम, जब इन पाप कर्मों का ये बोझ सहारा न गया। मानुष जन्म...

(3) यूं तो दुःख सुख में भी, दुनियां में कई जी लेते हैं, जीवन वो ही है जिसमें ईश्वर को बिसारा न गया। मानुष जन्म....

(4) खाना जीने के लिये, खाने के लिये कमाऐं बेशक, क्या वो कमाई जिसमें सचझूठ निहारा न गया। मानुष जन्म...

(5) लाख छिक्कार है 'हमदर्द' ऐसे जीने पर, याद में भगवन की, जीवन जो गुजारा न गया। मानुष जन्म...

(तर्ज : इस भरी दुनिया में कोई भी हमारा न हुआ...)

भजन -2

बीती जाए उमरिया तेरी, नाम जप ले घड़ी दो घड़ी, सच्चे सतगुर से नाता तो जोड़ो, टूटे मोह की तेरी हथकड़ी। बीती जाए....

(1) ईश्वर से जो वायदा किया, क्यों उसको निभाओ न तुम, नाम जपने की फुर्सत नहीं, ऐसी बातें बनाओ न तुम, इस भरोसे के धोखे न रहो, कि मेरी लम्बी उमरिया बड़ी। बीती जाए....

(2) ऐसे जीवन का है लाभ क्या, जीवन में जो ज्ञानी न हो, कर भजन तेरी परलोक में, प्राणी जाकर के हानि न हो, मौत सिर पर तेरे है खड़ी, हाथ आये न फिर ये घड़ी। बीती जाए...

(3) तेरा दम-दम में दम जा रहा, जन्म हीरा है गवां रहा, लाभ इसका उठाया नहीं, छोड़ अमृत तूं विष खा रहा, स्वांस है मोतियों की लड़ी, इनकी तूने कदर न करी। बीती जाए...

(4) आज से मन भजन में लगा, झूठी दुनियां का मोह छोड़कर, जन्म मृत्यु का चक्कर मिटा, सारे बन्धन तू चल तोड़कर, बात 'हमदर्द' ने जो करी, लगती खोटी मगर है खरी, बीती जाए....

(तर्ज: जिन्दगी की न टूटे लड़ी प्यार कर ले घड़ी दो घड़ी..)

भजन -3

बापू के प्यार की बातें, भुलाई जा नहीं सकती, वो पर उपकार की बातें, भुलाई जा नहीं सकती, बापू के प्यार....

(1) हमें है याद जिन राहों पे जब बापू जी चलते थे, वहां के लोग पापी और पत्थर दिल पिघलते थे, ये उस दातार की बातें भुलाई जा नहीं सकतीं। बापू के प्यार....

(2) बापू दरबार में हरदम बहारें ही बहारें हैं, है उनके वचन जैसे पड़ रही ठंडी फुहारे हैं, उनकी मेहंरो की बरसातें भुलाई जा नहीं सकतीं। बापू के प्यार....

(3) जो श्रद्धा प्रेम से चलकर बापू की शरण आते हैं। सर्वसुखों को पाकर अंत में मुक्ति को पाते हैं, वो बापू की करांमाते भुलाई जा नहीं सकतीं। बापू के प्यार....

(4) तेरे दासों का है ये दास, तेरे दर पे आया है, कहलाता तो है ये 'हमदर्द' दिल में दर्द लाया है, तेरी कृपा की सौगातें भुलाई जा नहीं सकती। बापू के प्यार.... वो पर उपकार...

(तर्ज : सुहानी चांदनी रातें हमें सोने नहीं देती...)

भजन - 4

भुला चुक्का जो वी बापू द्वारे आ गया, मन दियां मुरादां सभे ऐत्थो पा गया। भुला चुक्का...

बापू दा वरदान एत्ये जेहड़े वी आ जांदे ने, बापू दर उतों लंघे पंछी वी तर जांदे ने, श्रद्धा निश्चा धार जेहड़ा एथे आ गया। सारे सुख मिले मुक्ति वी पा गया।भुला चुक्का...

बापू श्रद्धाराम करदे सभ इच्छा पूरीयां आसां जो वी बन्दे दीयां रहीयां ने अधुरियां, श्रद्धाराम बापू दे जो गीत गा गया, मन दियां मुरादां...भुला चुक्का...

एस दर उते झुके राजा अते रंक ने, जग उते वेखे न कोई एहो जेहे संत ने, पापीयां दे पाप कट, सीने ला गया, भुला चुक्का...

ओम जी दा झण्डा एथे वापू जी ने लाया ए, स्वर्ग विचों कल्पवृक्ष बापू ने मंगाया ए, झण्डे थले आके जो वी सिर निवा गया मन दी मुरादां...भुला चुक्का...

जेहड़ा बन्दा बापू जी दा, दास बन जाएगा, बापू जी दी जोत विच, जोत नूं मिलाएगा, कहे 'हमदर्द' ओ अमर पद पा गया मन दीयां मुरादां.. भुला चुक्का... (तर्ज : अच्छा सिला दिया...)

भजन 5

दर तेरे बिगड़ी बनाने आ गये, हम भी किस्मत आजमाने आ गये। दर तेरे बिगड़ी...

(1) लाखों की बिगड़ी बनाई आपने, सबकी बापू की भलाई आपने दासतां अपनी सुनाने आ गये। दर तेरे बिगड़ी...

(2) हम अगर पापी हैं तो फिर क्या हुआ, पतित पावन नाम हैं बापू तेरा, पाप अपने बख्शवाने आ गये, दर तेरे बिगड़ी...

(3) बेनती मेरी करो परवान जी, सुन भी लो फरियाद श्रद्धाराम जी, अब गमों से बहुत हम घबरा गये, हम भी.. दर तेरे बिगड़ी...

(4) दर तुम्हारा छोड़कर जाएं कहां, भक्ति मुक्ति सारे सुख मिलते यहाँ, बापू जी 'हमदर्द' को क्यों भुला गये। दर तेरे बिगड़ी...

(तर्ज : दिल के अरमां...)

भजन 6

नहीं देखते हैं हम अपने करम, यूं ही दोष देते हैं ईश्वर को हम। नहीं देखते...

(1) भरा छल कपट से है जीवन हमारा, किया सबसे धोखा न सोचा विचारा। हर इक बात पर खाएं झूठी कसम। नहीं देखते...

(2) सभी दुनियां भर की बुराईयां है जितनी, भरी अपने मन में है उतनी की उतनी । करे पाप निसदीन न आए शरम। नहीं देखते....

(3) अगर जिन्दगी को सुखी है बनाना, तो सीखें हम अपने धरम को निभाना। कहां हम निभाते हैं अपना धर्म नहीं देखते...

(4) अगर हम बुराईयों से बचकर चलेंगे, आसरा ले सतगुर का सिमरन करेंगे। सदा ही करें हम अच्छे करम। करम फल को छोड़ें ईश्वर पे हम। नहीं देखते...

(5) करें प्यार सबसे, सभी से भलाई, मिले मन को शान्ति यही है सच्चाई। तो मिट जाएं 'हमदर्द' सारे भरम, नहीं देखते हैं हम अपने (तर्ज : बहुत प्यार करते हैं ....)

भजन 7

उसे न भुला, मुरख मनुआ रे उसे न भुला

(1) जिसने बनाया संसार ये सारा, तुझको दिया है कैसा जीवन प्यारा। ऐसा जीवन फिर कभी न मिलेगा, राम न बोले जीवन रोले ओ बांवरिया। उसे न भुला...

(2) तेरे लिये है जिसने बाग लगाये, सुन्दर-सुन्दर फलफूल खिलाए। छत्ती प्रकार के भोजन खाने को रहने को तेरे सुन्दर रच दी नगरीया। उसे न भुला...

(3) सुन्दर गहनों से तन को सिंगारे, रेशमी वस्त्र इस पर धारे। निरमल जल से जीवन सुख पावे, फिर भी न श्याम याद आवे मुरली धरीया। उसे न भुला...

(4) ये दुनिया इक गोरख धंधा, पागल हो जाए इसमें बन्दा, 'हमदर्द' मोह माया में फस के प्रभु को भुलाया न ध्याया तू सावरिया उसे न भुला...

(तर्ज : मुझे न बुला, छुप-छुप छलिया रे)

भजन 8

हम पापी जीवों की हालत क्या होती, जो सतगुर न आते गले न लगाते हम पापी...

(1) अगर सतगुरू का सहारा न मिलता, तो हम डूब जाते किनारा न मिलता, ये नैय्या हमारी, भवंर में ही होती, जो सतगुर न आते गले न लगाते, हम पापी...

(2) नहीं कोई दुनिया में साथी किसी का, है सब स्वार्थी सबका मतलब का रिश्ता, सच्चाई की हमको खबर भी न होती, जो सतगुर न आते न रस्ता दिखाते, हम पापी...

(3) शरण सतगुरू की अगर हम न आते, भटकते भटकते यूं ही मर जाते, और पापों की गठरी धरी सर पे होती, जो सतगुर न आते बड़े दुःख उठाते। हम पापी...

(4) कर्म का ये चक्कर चले जिन्दगी पे, न 'हमदर्द' शिकवा करो तुम किसी से। कर्म की गति से है किस्मत बदलती, गुरू शरण आके कर्म भेद पाके। हम पापी...

(तर्ज : हमें और जीने की चाहत न होती)

भजन 9

न्यारी लीला मेरे सतगुर श्रद्धाराम की किसी सूझ वाली आँख ने पहचान की न्यारी लीला मेरे...

(1) कीते खेल ने अपार, भोले शंकर दा अवतार। अपने आप नूं सी जग तो छुपावंदे, करदे सबदे सी काज, रखदे सेवकां दी लाज, करदे आप नाम बापू दा लगावंदे है बेअंत इसदी माया, किसे भेद न पाया।

बांकी छवि एस हस्ती महान दी किसी सूझ वाली....

(2) करदे सबनूं सी प्यार, एहने दुखियां दे यार। जिसने जो वी वर मंगेया सो पा लेया। कई करमा दे मारे, डिगे एहना दे द्वारे। देके प्यार अपने चरणा नाल ला लया। कई रोगी जो निराश नहीं सी बचने दी आस। बख्शी जिन्दगी दोबारा जीवन दान दी। मेहरबानी होई ऐस मेहरबान दी। न्यारी लीला...

(3) कीती बच्चे ने पुकार, विच जंगल मझार, बापू खू विच डिगे नूं बचा लेगा। झट पोहच गये दयाल लेया बच्चे नूं संभाल। हस्त कमला उत्ते बापू ने उठा लेया। करिश्मे देखे बेशुमार, इनकी महिमा अपरंपार। 'हमदर्द' ने थोड़ी सी ब्यान की, है बेअंत लीला बापू श्रद्धाराम की न्यारी लीला....

(तर्ज : ये कहानी है दीये की और तूफान की)

आरती

ओऽम जय गुरुदेव दयानिधि दीनन हितकारी। जय जय मोह विनाशक भवबंधन हारी।।

ओऽम जय जय जय गुरुदेव ।1।

ब्रह्मा विष्णु सदा शिव गुरू मूर्त्तिधारी।वेद पुराण बखानत गुरू महिमा भारी।।ओऽम जय जय जय गुरुदेव ।2।

जप तप तीरथ संयम दान विविध दीने। गुरू बिन ज्ञान न होवे कोटि यतन कीने ।।ओऽम जय जय जय गुरुदेव ।3।

माया मोह नदी जल जीव बहें सारे। नाम जहाज बिठाकर गुरू पल में तारे ।।ओऽम जय जय जय गुरुदेव ।4।

काम क्रोध मद मत्सर चोर बड़े भारे।ज्ञान खडग दे कर में गुरू सब संहारे ।।ओऽम जय जय जय गुरुदेव । 5।

नानापंथ जगत में निज निज गुण गावें।सबका सार बताकर गुरू मार्ग लावे ।।ओऽम जय जय जय गुरुदेव ।6।

गुरूचरणामृत निर्मल सब पातक हारी। वचन सुनत तम नाशे सब संशय टारी ।।ओऽम जय जय जय गुरुदेव ।7।

तन मन धन सब अर्पण गुरू चरणन कीजे। बह्मानन्द परम पद मोक्ष गति लीजे ।। ओऽम जय जय जय गुरुदेव ।8।

जो कुछ है तेरा स्वामी सब कुछ है तेरा। तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा ।। ओऽम जय जय जय गुरुदेव ।9।

गुरूदेव जी की आरती जो कोई नित गावे। कहत शिवानन्द स्वामी मन वांछित फल पावे ।।ओऽम जय जय जय गुरुदेव ।10।

ओऽम जय गुरुदेव दयानिधि दीनन हितकारी। जय जय मोह विनाशक भव बन्धन हारी।। ओऽम जय जय जय गुरुदेव ।11।

बेनती

हाथ जोड़ बेनती करूं सुनिये दीन दयाल।तुम लग मेरी दौड़ है तुम ही हो रखवाल ।।आप की भक्ति प्रेम से मन होवे भरपूर ।राग द्वेष से चित्त मेरा कोसों भागे दूर।।अति अनुग्रह कीजिये सेवक अपना जान। अपनी भक्ति का मुझे शीघ्र बख्शिये दान।।हृदय में मेरे रात दिन रहे प्रकाशित ज्ञान। हर भक्तों के बीच में तेरा होवे नाम ।।कपट दंभ मेरे चित्त के कभी न आवे पास। ध्यान आपका रात दिन (मेरे) मन में करे निवास ।।नित शुद्ध और बुद्ध हो जगत के हो करतार। नमस्कार है आपको मेरा बारंबार ।।विनय करूँ मैं आप से जोड़कर दोनों हाथ।रखिये लाज कृपाल हो शरण आया हूँ नाथ।।केवल पूर्ण ज्ञान का घर मन में हो जाए। घट घट व्यापक ब्रह्म की निशदिन रही समाए।।गुरू जी हमारे सत्य है सदा रहत है संग।हृदय बैठे ज्ञान दे माया करत है भंग।।स्वामी पानप देव जी की महिमा कही न जाय।गुरू के शब्द विचार के मुक्ति को लीजिये पाय ।। औसर राखी द्रोपता संकट से प्रह्लाद।कहन सुनन की कुछ नहीं शरण पड़े की लाज।।नामा सदना सैन की और तारा नृप नार।राखी लज्जा सबन की तैसे मोहे उबार ।।औगुण हारे को

बेनती सुनिये गरीब निवाज।जे मैं पूत कपूत हूं बोहड़ पिता को लाज।।जे मैं भूल विगडेया ना कर मैला चित्त।साहब गौरा लोड़िये नफर बिगाड़े नित्त ।।

नफर भी ऐसा चाहिये साहब राखे चित्त ।साहब गौरा लोड़िये नफर बिगाड़े नित।।

हम कूकर भौंका आगे तेरे बदन दरबार। पसार।।कबीर कूकर राम का मुतिया मेरी नाउं।गले हमारे जेवडी जहं खीचें तहं जाउं ।।

ॐ दरबार तेरा जो है सब से आली।

सभी बाग दुनिया का तूं ही है माली ।।

तेरा नाम सच्चा है हिकमत निराली।

बनाया जगत जब नजर आप डाली ।।

अगर बादशाह को तू करदे भिखारी।

नहीं मेट सकता कोई मरजी तुम्हारी ।।

अगर कंगले को देवे बादशाही ।

हुआ कौन पैदा जो करदे मनाही ।।

होवे, मेहर तेरी तां उड़ जाये कंगाली।

चढ़ जावे फिर नाम की जो है लाली ।।

तेरे दर पे आया कोई जावे ना खाली।

तुही सब का दाता है दुनिया सवाली।।

करे बेनती दास सुनिये हे राम।

तेरी मेहर से शुद्ध होते हैं काम ।।

ॐ दरबार तेरा जो है सब से आली।

तेरे दरपे आया कोई जावे ना खाली।।

निवेदन

सत्गुरू श्रद्धाराम जी का जीवन चरित्र इतिहास उनकी ही कृपा दृष्टि से छपा है। वर्ना इन्सान में क्या शक्ति है जो ऐसी महान हस्ती और महान शक्ति का इतिहास लिख सके और फिर छपवा सके।

लेकिन पूरा इतिहास अब भी नहीं लिखा जा सका और ना ही इन्सान में इतनी शक्ति है जो पूरा लिख सके। ये इतिहास श्री राकेश कुमार जी चावला के सहयोग से छापा गया है।

हरदेव प्रिंट्र्ज़ प्रैस वालों ने बिना प्रोफिट के सिर्फ लागत लेकर छापकर दिया है। उनका बहुत-बहुत धन्यवाद और दास हमदर्द ने बापू जी के दरबार में भेंट किया और दानी सज्जनों का भी बहुत-बहुत धन्यवाद। जिन्होंने माया देकर सहायता की और बापू जी का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस लिखे हुए इतिहास में पाठकों को कोई गलती या त्रुटि नजर आए या छपने में कोई अक्षर गलत छप गया हो तो दास 'हमदर्द' क्षमा का याचक है।

ॐ